अखिलभारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानमूलक, ग्रामोद्योगप्रधान, अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

वार्षिक मूल्य ६) ■ सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार ■ एक प्रति २ आना

वर्ष-३, अंक-२० ■ राजघाट, काशी ■ शुक्रवार, १५ फरवरी, '५७

हर एक को देना है !

हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया बड़े सुंदर ढंग से काम करती है । जिस तरह होमियोपैथी के उपचार में मात्रा कम-से-कम होती है, लेकिन जितना उसको अधिक घोंटते हैं, उतनी वह अधिक परिणामकारी बनती है। पूर्ति में शर्करा भी ! वैसी ही स्थिति यहाँ है। इस प्रक्रिया में जब तक पूर्ण विश्वास नहीं होता, तब तक ऊपर-ऊपर के प्रचार से कुछ लाम नहीं हो सकता। इसलिए पहले मन में विचार पैठ जाना चाहिए। भूमिहीनों की टोलियाँ माँगती रहें, तो उससे काम होगा, यह अपेक्षा करना ठीक नहीं है, क्योंकि यह आंदोलन केवल प्राप्ति का आंदोलन नहीं है, देने का आंदोलन है। भूमिहीन हों या भूमिवान, जो भी कोई दें, उनका हृदय स्नेह से भरा रहना चाहिए, तभी वह इस यज्ञ का पायक और यश का भागी हो सकता है।

(एक पत्र से) —विनोबा

आत्मपरीक्षण की वेला !

(विनोबा)

आज का दिन हमारे लिए आत्मपरीक्षण का दिन है, उपदेश देने का नहीं। आज महात्मा गांधीजी की पुण्यतिथि है। आज का ही दिन था और यही समय था, जब कि वे प्रार्थना के लिए पहुँच गये थे और वहीं से खड़े-खड़े परमेश्वर के पास भी पहुँच गये। उनकी इच्छा थी, प्रार्थना थी और प्रयत्न था कि वे परमेश्वर का स्मरण करते-करते ही जिन्दगी बितायें और आखिर में उसीके स्मरण में लीन हो जायँ। ठीक उसी तरह से परमेश्वर ने उनको जब वे प्रार्थना की तीव्र भावना में थे, अपने पास बुला लिया। जिस देश के लिए उन्होंने आमरण प्रयत्न किया, जिस देश की सेवा के सिवा और किसी चीज की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया, उसी देश के एक भाई ने उन पर शस्त्र चलाया। वैसी ही बात ईसा मसीह के लिए भी हुई। जिनकी सेवा करना उन्होंने चाहा था, उन्हीं के हाथों से वे सूली पर चढ़ाये गये। ईसा मसीह के दो हजार साल के बाद यही घटना फिर से दुहराई गयी है। उनके स्मृति-दिवस पर आज हम यहाँ प्रार्थना करने के लिए जमा हुए हैं।

हिंदुस्तान पर भगवान् की जो कृपा हुई है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। प्राचीन काल से आज तक असंख्य सत्पुरुषों की सतत वर्षा परमेश्वर भरत भूमि पर बरसाता रहा। उत्कर्ष-काल में जो सत्पुरुष हुए, उन्होंने हमें वैराग्य सिखाया। वैभव में भी अनासक्त रहना चाहिए, यह तालीम उन्होंने हमें दी। अपकर्ष-काल में हमारे यहाँ जो सत्पुरुष हुए, उन्होंने हमें सिखाया कि हर हालत में हमें हिम्मत खोनी नहीं चाहिए, आपत्ति से डरना नहीं चाहिए। ईश्वर पर भरोसा रख कर आपत्ति का सामना करना चाहिए। जब हम सुख में रहते हैं, तब हम खतरे में हैं और जब हम दुःख में रहते हैं, तब भी हम खतरे में रहते हैं। सत्पुरुषों ने सुख के मौके में हमको संयम सिखाया और दुःख के मौके में धीरज दिलाया। ऐसा आपत्ति से बचाने वाला, दुःख में हिम्मत दिलाने वाला, निर्भयता सिखाने वाला एक महान् सत्पुरुष महात्मा गांधी परमेश्वर ने हमारे सामने भेज दिया। उन्होंने हमें जो तालीम दी, क्या हम उस पर चल रहे हैं ? यह सोचने का आज का दिन है। आज भी दुनिया खतरे से खाली नहीं है। हिंदुस्तान भी संकट से गुजर रहा है। कोई कह नहीं सकता कि दुनिया में किस वक्त लड़ाई शुरू हो जाय और मनुष्य-जाति की समाप्ति का समय आ जाय। बड़े-बड़े शस्त्रास्त्र बनाये गये हैं और दुनिया में कई तरह के मसले खड़े हैं, जिससे बड़ी कशम-कश चल रही है। इन सबका हल हिंसा से नहीं हो सकता। अभी दुनिया बड़ी डावाँडोल है। इस वक्त हमें महात्मा गांधीजी ने जो सिखाया, उसे याद रखने की, उस पर चलने की सख्त जरूरत है। महात्माओं की सिखावन हमेशा के लिए काम देती है। परंतु खास प्रसंगों में उनकी सिखावनों की तरफ ध्यान देने की बहुत ज्यादा जरूरत होती है। ऐसा ही अवसर, ऐसा ही समय, आज भारत के लिए है।

अभी चुनाव आ रहा है। आप देखेंगे कि महीने-डेढ़-महीने सब लोगों के दिल परस्पर मत्सर और स्पर्धा में लगे हुए दिखेंगे। यह सब जनता की शक्ति विकसित करने के लिए साधनरूप माना गया है। परंतु यह साधन भ्रममूलक है। चुनाव देश को बचा नहीं सकता, राजनीति देश को बचा नहीं सकती, लश्कर देश को और दुनिया को बचा नहीं सकता। केवल विज्ञान दुनिया को बचा नहीं सकता। विज्ञान दुनिया को बचाने में कुछ मदद दे सकता है। जब सबके हृदयों को करुणा का अनुभव आयेगा, तभी दुनिया का बचाव है। सत्पुरुषों ने भगवान् को करुणास्वरूप देखा है। भक्ति मार्ग में सब लोगों ने यही कहा है कि भगवान् करुणासागर है। भगवान् के गुण अनंत हैं, परंतु हमको सबसे ज्यादा जरूरत करुणा की है। इसलिए उस रूप में भगवान् का स्मरण करने की तालीम संतों ने हमको दी। इस करुणा को हम अपनी अल्प बुद्धि से जैसा समझ सके हैं वैसा दुनिया में फैलाने का काम अत्यंत नम्र भाव से हमने उठा लिया है और आज के दिन हम इसी परीक्षण में लगे रहे कि इस करुणा में हमारा कितना विकास हो चुका है। बाबा अपने को एक व्यक्ति के तौर पर नहीं मान रहा है। अपनी मुक्ति की इसको कोई चिंता नहीं है, क्योंकि उसको पक्का विश्वास है कि इसके लिए परमेश्वर ने मुक्ति के सिवा दूसरी चीज रखी ही नहीं है। वह तो आत्मा के साथ जुड़ी हुई चीज है, वह कहाँ जायगी ? इसलिए बाबा को उसकी कोई चिंता नहीं है और बाबा व्यक्तिगत तौर पर अपने लिए कुछ भी नहीं सोचता है, परंतु ईश्वर की करुणा सर्वत्र कैसे फैले, उसका सुन्दर दर्शन सर्वत्र किस तरह हो, उसीकी चिंता बाबा को ज्यादा होती है।

भूदान का विचार फैलाते-फैलाते बाबा ने ग्रामदान की बात शुरू कर दी। कहने में हमें खुशी होती है कि करीब दो हजार गाँवों ने अपनी मालकियत छोड़ दी और गाँव के लिए अपनी पूरी जमीन समर्पित कर दी है। अगर हिंसा के तरीके से दो हजार गाँवों ने छीन करके जमीन प्राप्त की होती, तो कुल दुनिया में उसकी बात चलती। परंतु लोगों ने प्रेम से अपनी मालकियत छोड़ी है, तो उसकी कद्र आज की दुनिया को नहीं होती है। आज के समाज की हालत यही है, इसलिए भगवान् की करुणा की हमें याचना करनी पड़ती है। हम अपने लिए यह भाग्य समझते हैं कि करुणा-याचना का विचार हमको सूझता है। छह साल हुए बाबा घूम ही रहा है। अगर ईश्वरी करुणा की आज्ञा नहीं होती, तो बाबा यह कर नहीं सकता।

एक भाई ने लिखा कि बाबा काम तो अच्छा करता है, लेकिन बार-बार ईश्वर का नाम क्यों लेता है ? वह अर्थशास्त्र की बात समझा दे, तो काफी है। अर्थशास्त्र की प्रेरणा से बाबा को छह साल घूमने की ताकत नहीं मिल सकती। उसको जो ताकत मिलती है, वह परमेश्वर के स्मरण से मिलती है, उसमें बाबा का कोई इलाज नहीं है। बाबा बिलकुल बेफिक्र होकर घूम रहा है। बाबा किसी मनुष्य की कोई परवाह नहीं करता, क्योंकि उसका पूरा भरोसा ईश्वर पर है ! इसलिए यह सधा है। किसे खयाल था कि बिना किसी दबाव के लोग अपनी कुल की कुल जमीन की मालकियत छोड़ देंगे, ग्रामदान कर सकेंगे ? और फिर थोड़े से ग्रामदानों की बात नहीं, हजारों ग्रामदान मिलेंगे। यह सब किसने सोचा था ? माना कि उड़ीसा के जंगलों के आदिवासियों ने हजारों ग्रामदान दे दिये, परंतु मदुरा जिले के सुधरे हुए ज्ञानी, पढ़े-लिखे, बुद्धिशाली लोग ग्रामदान करेंगे, यह किसने जाना था ? स्पष्ट है कि परमेश्वर की करुणा की बाढ़ जोरों से आ रही है। परमेश्वर की करुणा प्रकट हो रही है।

www.vinoba.in

आज यह बोलते हुए हमारे सामने बापू खड़े हैं। हमारा कुल जीवन उनके चरणों में समर्पित है। हम तो जब बच्चे ही थे तभी-से सारा छोड़ कर उनके पास पहुँचे थे। तब से आखिर तक उनके चरणों में रह कर सेवा करने की बुद्धि भगवान् ने हमें दी। आज उनकी सेवा के सिवा हमें और कुछ नहीं सूझ रहा है। उनके आशीर्वाद हमारे सिर पर हैं, अंदर-बाहर, चारों तरफ हैं। व्यवहार में हम असंख्य गलतियाँ करते हैं। हमें तो परमेश्वर का स्मरण करते-करते बिलकुल खुल कर काम करने की आदत है। इस वास्ते बीसों गलतियाँ हो जाती हैं तो भी उसके लिए हमें पश्चात्ताप नहीं होता है, क्योंकि गलतियाँ भी हम उन्हीं को समर्पण करते हैं। केवल उनके काम में हमारा शरीर खत्म हो जाय, यही एक वासना हमने रखी है। आज के इस पवित्र स्थान में माणिक्यवाचकर और दूसरे अनेक महासत्पुरुषों का स्मरण करके हम बापू के चरणों में दृढ़प्रतिज्ञ हैं कि इस देह से निरंतर धर्म ही की सेवा होगी।

—तिरुवारूर, तंजाऊर ३०-१-'५७

सत्याग्रही लोक-सेवकों से —

पूज्य विनोबाजी की प्रेरणा से अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ ने नवम्बर १९५६ की पळनी की सभा में भूदान-आन्दोलन को तंत्र-मुक्त और निधि-मुक्त करने का निर्णय किया था। इस निर्णय के अनुसार देश भर में जो भूदान-समितियाँ, संयोजक आदि तंत्र था, वह १ जनवरी १९५७ से विसर्जित कर दिया गया है। इस तरह आन्दोलन को किसी संस्था-विशेष या तंत्र के दायरे में सीमित न रख कर उसे जन-आधारित बना देने की ओर कदम बढ़ाया गया है। भूदान-कार्यकर्ता भी संचित या केन्द्रित निधि के आश्रय से मुक्त हुए हैं। प्रेम के जरिये समाज में मूलभूत आर्थिक क्रांति करके गरीबी-अमीरी का भेद-भाव मिटाया जा सकता है, यह बात पिछले पाँच वर्षों के आन्दोलन से स्पष्ट हो गयी है। अतः तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति के बाद अब लोग स्वयं जगह-जगह इस उपयोगी और आवश्यक समाज-परिवर्तन के काम को उठा लेंगे, ऐसी आशा करना अनुचित नहीं होगा।

जमीन का न्यायोचित बँटवारा तो इस आर्थिक क्रांति का पहला कदम है। हमें भूलना नहीं चाहिए कि अन्ततोगत्वा हमें समाज में से सब प्रकार के शोषण को मिटा कर ग्रामराज्य और रामराज्य तक, अर्थात् स्वावलम्बी, सहयोगी अहिंसक समाज या सर्वोदय-समाज की स्थापना तक पहुँचना है। दुनिया में शांति तभी संभव हो सकेगी और तभी शोषित तथा पीड़ित जनता को विज्ञान का पूरा लाभ भी मिल सकेगा। ऐसे महान् आदर्श की सिद्धि के लिए अपना संपूर्ण जीवन खपा देने की प्रेरणा सैंकड़ों-हजारों निष्ठावान सेवकों के मन में जगेगी, ऐसी आशा है। सर्वोदय-समाज की स्थापना और उसके पूर्व-कदम के तौर पर ग्रामराज्य की सिद्धि उनके जीवन का लक्ष्य और मुख्य काम होगा और इस काम में जुट जाने में वे अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव करेंगे। ऐसे सत्याग्रही लोक-सेवकों के लिए नीचे लिखी जीवन-निष्ठा मानी गयी है:

(१) सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह में उनकी दृढ़ निष्ठा हो और तदनुसार जीवन बिताने की वे कोशिश करते हों।

(२) लोकनीति की स्थापना से ही दुनिया में सच्ची स्वतंत्रता हो सकेगी, ऐसा उनका विश्वास हो। इसलिए वे किसी प्रकार की दलीय राजनीति-पार्टी पॉलिटिक्स-में या सत्ता की राजनीति (पॉवर पॉलिटिक्स) में भाग नहीं लेंगे और भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षों के व्यक्तियों का समान आदर-बुद्धि से सहयोग लेने की उनकी वृत्ति और प्रयत्न रहेगा।

(३) बिना किसी कामना के, समर्पण बुद्धि से वे लोक-सेवा करते रहेंगे।

(४) वे जाति (caste), वर्ग (class) तथा पंथ (creed) के किसी प्रकार के संकुचित भेदों को नहीं मानेंगे।

(५) वे अपना पूरा समय और चिंतन-सर्वस्व सर्वोदय के प्रत्यक्ष साधन-स्वरूप भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसात्मक क्रांति के काम में लगायेंगे।

उपरोक्त प्रकार की जीवन-निष्ठा वाले लोक-सेवक जितनी अधिक संख्या में आगे आवेंगे, अहिंसक क्रांति का काम उतनी ही तेजी से आगे बढ़ेगा। ऐसे सेवकों के नाम काफी संख्या में सर्व-सेवा-संघ के दफ्तर में आये हैं तथा और भी आयेंगे। आंदोलन अब तंत्र-मुक्त है। अतः किसीका इंतजार किये बिना ऐसे सब लोकसेवक अपने-अपने क्षेत्र में काम में जुट जायेंगे। पर तंत्र-मुक्ति के साथ आंदोलन में व्यवस्थित प्रयत्न और एकरूपता नष्ट न हो तथा देश भर में चल रहे काम की जानकारी बराबर एक-दूसरे को होती रहे, इस दृष्टि से लोकसेवक उपरोक्त निष्ठा-पत्र पर हस्ताक्षर करके उसे सर्व-सेवा-संघ के पास भेजें, वहाँ से स्वीकृति प्राप्त करें और नीचे बताये अनुसार संपर्क रखें, यह उचित होगा। एक जिले में या परिस्थिति के अनुसार उससे कुछ छोटे-बड़े क्षेत्र में एक से अधिक लोक-सेवक हों, उन सबका चूंकि एक ही लक्ष्य होगा और निष्काम-वृत्ति से सेवा करने वाले वे होंगे, इसलिए सब मिलजुल कर अपने क्षेत्र में काम का संयोजन कर लेंगे, ऐसा विश्वास है। सर्व-सेवा-संघ को हर जिले या क्षेत्र में संपर्क रखने में सुविधा हो, इस दृष्टि से उस क्षेत्र या जिले के लोकसेवक मिल कर अपने में से किसी एक का नाम संघ को सुझायेंगे, तो बेहतर होगा। फिलहाल सभी लोकसेवक हर महीने में दो बार यानी हर माह की १ तारीख से १५ तारीख तक तथा १६ तारीख से महीने के अंत तक की अपने काम की रिपोर्ट अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ को भेजते रहें। दक्षिण के चारों प्रांत याने तमिळनाड़, केरळ, कर्नाटक और आंध्र के लोक-सेवक अपनी रिपोर्ट अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ के मार्फत खादी-वस्त्रालय, फोर्ट, बेंगलोर (दक्षिण भारत) भेजें और शेष सभी प्रांतों के लोकसेवक पो० खादीग्राम, जिला मुँगेर (बिहार) के पते पर भेजें।

हर जिले या क्षेत्र में एक जगह दानपत्र, साहित्य आदि उपलब्ध हो सकें और आवश्यकतानुसार हिसाब-किताब, दानपत्रों के रिकार्ड आदि की समुचित व्यवस्था हो, ऐसा एक "सर्वोदय-कार्यालय" स्थानीय संस्थाओं या व्यक्तियों के सहयोग से खड़ा करने में, जरूरत हुई तो सर्व-सेवा-संघ मदद करेगा।

इसके पहले भूदान-आंदोलन की कार्य-रचना के बारे में जो परिपत्र आदि भेजे गये हैं या प्रकाशित हुए हैं, उनमें जो अंश उपरोक्त बातों से मेल न खाते हों, वे रद्द समझे जायँ। उनकी बाकी की सारी बातें यथावत मानी जायँ।

विनोबा-पड़ाव, १-२-'५७

—सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री
अ. भा. सर्व-सेवा-संघ

लोक-सेवकों की कसौटी !

(धीरेन्द्र मजूमदार)

भू-क्रान्ति का ध्येय सर्वोदय-समाज की स्थापना है। सर्वोदय-समाज शासन-निरपेक्ष तथा शोषणहीन समाज कायम करना चाहता है। शासन-निरपेक्ष समाज स्वभावतः नियंत्रण-शून्य होगा। अगर कहीं नियंत्रण रहेगा, तो वह विचार का ही नियंत्रण होगा।

जिस आन्दोलन के नतीजे से सारा समाज नियंत्रण-मुक्त होगा, वह आन्दोलन ही केन्द्र-नियोजित तथा केन्द्र-नियंत्रित हो, यह इस विचार के स्वभाव के विरुद्ध है। अतः विनोबाजी ने आन्दोलन को जो तंत्रमुक्त तथा जन-आधारित कर दिया है, यह उचित ही था। ऐसी हालत में सर्वोदय-विचार के अनुसार लोक-सेवकों की जिम्मेवारी गम्भीर हो गयी है। अब उनका अपना कर्तृत्व नहीं रह जाता, न वे अब कार्यकर्ता ही रहे हैं। कार्यकर्ता तो अब सारी जनता है। अब लोक-सेवक जनता के गुरु के स्थान पर आ गये, क्योंकि उन्हें अब केवल जनता को समुचित मार्ग-प्रदर्शन करना है। गुरुत्वहीन गुरु नमकहीन नमक के बराबर है। अर्थात् समाज में उनकी कोई कीमत नहीं। लोक-सेवक इस बात पर गंभीर विचार करें!

आज के युग में शोषण-मुक्ति का मतलब है, व्यवस्थापकवाद से मुक्ति। मानव-समाज ने शोषण-मुक्ति का आन्दोलन उसी समय से शुरू किया था, जब से सामन्तवाद को समाप्त करने का काम आरंभ किया था। सामन्तवादी शोषण तथा निर्दलन की मुक्ति की चेष्टा में ही पूँजीवादी शोषण का आविर्भाव हुआ। जब मनुष्य ने उसे हटाने की कोशिश की, तो उस कोशिश के सिलसिले में ही उसके सामने शोषण के लिए व्यवस्थापकवादी एक महाअसुर उपस्थित हुआ, जिसने आज तक उत्पादक वर्ग का सारा उत्पादन निःशेष कर समाज का शोषण तथा निपीड़न पूर्ववत जारी ही नहीं रखा, बल्कि अपने वर्ग के संख्याधिक्य के कारण उसमें इज़ाफा भी किया। अगर शोषणहीन समाज कायम करना है, तो व्यवस्थापक-वाद को समाप्त करके श्रमजीवी उत्पादक वर्ग द्वारा सहकारी स्वावलम्बी समाज कायम करना होगा। इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि सेवक अपने शरीरश्रम से और मित्रों के श्रमदान से ही अपना गुज़ारा कर क्रान्ति के सतेज वाहन बनें। मुझे आशा है, इस प्रश्न पर विचारेंगे।

www.vinoba.in

देशभक्ति और नागरिक सदाचार

(श्री बा० गं० खेर)

'देशभक्ति' का अर्थ-सूचक अंग्रेजी शब्द 'पैट्रियॉटिज्म' यूनानी भाषा के 'पैट्रिओट्स' शब्द से निकला है और उसके अर्थ का सम्बन्ध पितृभूमि की भावना से है। जैसा कि आप जानते हैं, पितृभूमि की कल्पना ने विभिन्न कालों में विभिन्न रूप धारण किये हैं। हम सबसे अलग-अलग नहीं रहते, रह भी नहीं सकते। मनुष्य एक यूथ-चारी अर्थात् समूह बना कर रहने वाला प्राणी है। अपने जीवन में वह अपने परिवार के सदस्यों, अपने व्यवसाय के साझीदारों, सामाजिक मनोरंजन के लिए दूसरों के साथ रहने का मौका दिलाने वाले क्लबों के सदस्यों, अपने नागरिक साथियों, जिनके साथ वह अपने शहर की नगरपालिका जैसी संस्थाओं के कारण सम्बद्ध होता है, और ऐसे ही अन्य लोगों से बल्कि सारी मानव-जाति से किसी-न-किसी प्रकार के सम्बन्ध रखता है—फिर ये संबंध सीधे हों या अप्रत्यक्ष! ऐसे ही एक समूह के साथ, जो कि सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है, व्यक्ति का सम्बन्ध रहता है। यह समूह है उसका राष्ट्रीय समाज, जिस पर उसके अपने देश की सार्वभौम सरकार राज करती है। सार्वभौम सरकार को अपने अधिकार क्षेत्र की सीमाओं के अंदर रहने वाले सभी समूहों और व्यक्तियों पर पूरा अधिकार प्राप्त होता है; इसलिए व्यक्तिगत नागरिक को स्वभावतः ही अन्य सब बातों की अपेक्षा अपने राज्य को ही निष्ठा देनी पड़ती है। इस प्रकार की निष्ठा को मान्यता देने के अर्थ में देशभक्ति के लिए आधुनिक समाज में व्यक्तिगत नागरिक की दृष्टि से स्पष्टतः उचित मूल्यों का खयाल रखते हुए महत्त्व का स्थान प्राप्त हुआ है।

वैसे हमारी नागरिकता पर कई निष्ठाओं का अधिकार होता है, जैसे परिवार, समूह, ट्रेड-यूनियन, राष्ट्र, मानवता आदि। जिस वक्त जिसे ज़रूरत हो, वह हमारी निष्ठा पर अधिकार बता सकता है। मगर साथ ही हमें स्पिनोजा (Spinoza) की इस उक्ति का विस्मरण नहीं होने देना चाहिए कि "राज्य-सत्ता का असली उद्देश्य तो स्वातन्त्र्य ही होता है।"

जनतंत्र का मुख्य लक्षण यह नहीं है कि जिन लोगों पर राज चलाना हो, उनकी स्वीकृति अधिक स्वेच्छा से प्राप्त की जाय, बल्कि वह इसमें निहित है कि उनकी यह स्वीकृति उचित समय के अन्दर बार-बार सरकार द्वारा उनसे पूछी जाय और स्वीकृति के लिए उनसे प्रार्थना की जाय। मानव चाहे जितनी चेष्टा करे, तो भी वह कभी पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। व्यक्तियों में सबसे बुद्धिमान् मनुष्यों के हाथों में सत्ता की बागडोर दी जाय, तो भी वे मानव की अंगभूत गलतियों और कमजोरियों के शिकार हो सकते हैं। इसलिए जनतांत्रिक संविधान में यह उपाय रखा जाता है कि ऐसे राज्यकर्ताओं पर उन लोग द्वारा रोक एवं नियंत्रण रखा जाय, जो उनसे कम बुद्धिमान् हों, तो भी अपने अधिकारों और हितों के प्रति जाग्रत रहते हैं। इसीलिए हर तीन-चार या पाँच साल के बाद हम चुनाव के जरिये अपनी सरकार चुनते हैं।

अब मैं इस विषय पर विचार करूँगा कि कौनसी परिस्थितियों में मनुष्य के लिए यह जरूरी हो सकता है कि वह अपने ही सार्वभौम राज्य के मानव-निर्मित कानूनों से अधिक उच्च कानून को स्वीकार करे। उस अर्थ में देशभक्ति एक ऐसी निष्ठा बन जाती है, जिसे अन्ततोगत्वा मनुष्य की उस अत्युच्च निष्ठा के आगे झुक जाना पड़ता है, अर्थात् उसकी अन्तरात्मा की निष्ठा माननी पड़ती है—या दूसरे शब्दों में कहें, तो नैतिक कानून की अधीनता स्वीकार करनी पड़ती है। मगर इस सम्बन्ध में कुछ कहने से पहले मैं फिर से यह दुहराना चाहता हूँ कि देशभक्ति से भी ऊपर की निष्ठा का यह समर्थन केवल कुछ ही ऐसी परिस्थितियों के लिए सीमित रहना चाहिए, जहाँ जनता के सार्वजनिक महत्त्व के विषय पर व्यक्ति की अन्तरात्मा सचमुच ही सम्बद्ध हो गयी है। यह एक ऐसा अधिकार है, जिस पर अत्यंत ठोस नैतिक अनिवार्यता की स्थिति में और केवल उसके लिए लायक व्यक्तियों द्वारा ही अमल किया जाना चाहिए। कानून भंग करने का यह सापेक्ष अधिकार हर रोज की मामूली बात नहीं समझना चाहिए या ऐसा नहीं मानना चाहिए कि उससे साधारण मनुष्य को मामूली बहानों से अपने देश के कानून का मखौल उड़ाने का ठीका मिल गया है। उस अधिकार के लिए कुछ शर्तें और सीमाएँ भी हैं। आधुनिक काल में महात्मा गांधीजी ने देश के क़ानूनों को भंग करने के अधिकार या कर्तव्य की नीति, पद्धति, न्याय्यता एव सीमाओं के सम्बन्ध में जितना लिखा या कहा है, उससे अधिक और किसीने लिखा या कहा नहीं है। इस प्रकार की अवज्ञा व्यक्तिगत भी हो सकती है और सामूहिक भी। इन दोनों परिस्थितियों में, महात्माजी ने पहली शर्त यह बतायी : साध्य एवं साधन शुद्ध होने चाहिए।

मुझे आश्चर्य होता है कि वह राष्ट्रपिता एवं सत्याग्रह का आविष्कर्ता क्या सोचेगा, जब उसे यह मालूम होगा कि उसका वह शस्त्र अब नौकरी से निकाले गये नौकरों, हारे हुए उम्मीदवारों और ऐसे ही अन्य लोगों द्वारा अपनी शिकायतों को दूर कराने और अपनी अंतरात्मा की आज्ञा मानने के लिए कैसे धड़ल्ले से काम में लाया जा रहा है? इस शस्त्र के दुरुपयोग के खतरों से अब सारे लोग परिचित हो चुके हैं। ये खतरे हमारे इस देश में विशेष भयंकर हैं, जिसे राजनैतिक आजादी मिले अभी आठ ही साल हुए हैं; क्योंकि यहाँ के धार्मिक, सांप्रदायिक, भाषिक एवं अन्य भेदों के कारण स्वयं इस देश के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो सकता है।

नागरिक क़ानूनों को उनकी अन्तिम सामर्थ्य, अधिकारों और दंड-शक्तियों से प्राप्त होती है। नैतिक क़ानूनों के पीछे ऐसी कोई बाध्य करने वाली सेना नहीं होती। नैतिक क़ानून की सामर्थ्य, तो सीधे उस व्यक्ति की अन्तरात्मा में रहती है, जिसका उससे सम्बन्ध हो। धार्मिक विश्वासों एवं नीति तथा उपासना की पद्धतियों का उद्देश्य यह होता है कि वे व्यक्ति का उस भगवान् से साक्षात्कार करा दें, जो उसके अन्दर ही रहता है। अतः अंततोगत्वा कोई सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि जहाँ नैतिक कानून और नागरिक कानूनों में संघर्ष पैदा होता है, वहाँ मनुष्य की निष्ठा नैतिक क़ानून के साथ ही रहनी चाहिए।

देशभक्ति तो एक बड़ी ही जटिल भावना है, जो आदिम प्रवृत्तियों और बौद्धिक श्रद्धाओं के मिश्रण से बनायी गयी है और जिसमें एक प्रकार का धार्मिक तत्त्व भी मिला हुआ है। यह देशभक्ति सर्वोच्च नैतिक क़ानून या धर्म का स्थान कभी नहीं ले सकती। उसमें विश्वात्मकता का अभाव होता है। उसके सामने तो केवल अपने अकेले के देश की भलाई का ही उद्देश्य रहता है, न कि सारी मानवता का। इसीलिए ऐसा कहा गया है कि "जिस जगत् में देशभक्त ही भरे पड़े हों, वह संघर्षों से भरा हुआ जगत् हो सकता है।" क्या आजकल हमें ऐसा ही दिखाई नहीं देता है?

वास्तव में व्यक्ति, तो उन वृत्तों या घेरों का केन्द्र होता है, जो परिवार, शहर, राष्ट्र एवं मानवता के रूप में सतत बढ़ते रहते हैं। ये वृत्त एक-दूसरे को काटते नहीं हैं, बल्कि एक ही केन्द्र के इर्दगिर्द घूमते हैं। अतः इन वृत्तों में कोई संघर्ष नहीं होना चाहिए—उन सबके प्रति निष्ठा रखने में कोई कठिनाई पैदा नहीं होनी चाहिए। जरूरत इस बात की है कि व्यक्ति का मूल्य बढ़ जाय। शासन-पद्धतियाँ अथवा आन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तो केवल एक तंत्र या तरीका है, जिसके द्वारा सारे संसार के मनुष्यों के हृदयों में रहने वाली शांति एवं सद्‌इच्छा के लिए मार्ग बना दिया जा सकता है।†

† आन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद में दिये २-७-'५७ के भाषण से, "निधि-समाचार" से सादर।

सर्वोदय के संकेत

सर्वोदय केवल एक दर्शन और तत्त्वज्ञान ही नहीं है, उसमें एक समाज-विज्ञान और आचार-नीति का भी समावेश होता है। इसलिए वह वैयक्तिक और सामुदायिक आचरण के कुछ मूलभूत संकेतों का निर्देश करता है। दर्शन ने अब तक जीवन के रहस्यों को समझा और समझाया। विज्ञान ने सृष्टि के नियमों और शक्तियों का अविष्कार तथा शोध किया। लेकिन वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन और व्यवहार में परिवर्तन करने की सामर्थ्य न तो केवल दर्शन में है और न शुद्ध विज्ञान में ही है। इसीलिए दार्शनिक व्यवहार-विमुख हो गये, वैज्ञानिक प्रयोग-शालाओं के बंदी बन गये और व्यवहार-कुशल व्यक्तियों ने अपने रथ में दर्शन के श्यामकर्ण को तथा विज्ञान के उच्चैःश्रवा को जोत लिया। सर्वोदय में दर्शन और विज्ञान के साथ-साथ जीवन-परिवर्तन की आचारात्मक प्रक्रिया का भी अन्तर्भाव है। दर्शन के तत्त्वों को और विज्ञान के आविष्कारों को जब मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन में चरितार्थ करता है, तो हम उसे विवेकयुक्त, सदाचारी और वस्तुनिष्ठ ध्येयवादी व्यक्ति मानते हैं। व्यक्तिगत सद्‌गुणों का और शक्तियों का विनियोग जब सामाजिक जीवन में होता है, तब व्यक्तिगत व्रतों का रूपांतर सामाजिक मूल्यों में होता है।

सर्वोदय कोई संप्रदाय नहीं है। वाद तो वह हो ही नहीं सकता। इसलिए सर्वोदय के विचार किसी ढाँचे में नहीं ढाले जा सकते। सत्य एक ही होता है। अतः सर्वोदय के विचारकों में मूलभूत एकता अवश्य होती है। परंतु यहाँ किसी भी तरह की 'ठप्पेबाजी' के लिए गुंजाइश नहीं। सर्वोदय की कोई 'छापें' या 'मुहरें' नहीं हैं। मूल सिद्धान्तों के प्रकाश में स्वतंत्र विचार के लिए अबाधित अवसर है।*

राजघाट, काशी २१-१-'५७ —दादा धर्माधिकारी

*श्री रामकृष्ण शर्मा की "सर्वोदय समाज-रचना" माला के अंतर्गत दो पुस्तकें: (१) तात्त्विक आधार और (२) सामाजिक मूल्य के लिए लिखी गयी प्रस्तावना से।

—व्यवस्थापक

www.vinoba.in

सरकारी सेवकों से—

(विनोबा)

अंग्रेज लोग पहले व्यापार के बहाने यहाँ आये थे। कई दिनों तक उनका व्यापार ही चला। फिर व्यापार के रक्षण के लिए कुछ सेना भी रखनी पड़ी। उन्होंने यहाँ की सेना बनायी, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य था, व्यापार के अलावा हिंदुस्तान के उद्योगों का और धंधों का बहुत बारीकी से अध्ययन करना। जगह-जगह इंग्लैंड के उद्योगों को किस तरह बढ़ावा दिया जा सकता है, और यहाँ के कच्चे माल का पक्का माल बनाने में किस तरह उनको फायदा हो, इसका बारीक निरीक्षण किया। संभव है कि उनका व्यापार चलने में कोई बाधा नहीं पहुँचती और देश को चूसने की सब सहूलियत मिल जाती, तो संभव है वे राजतंत्र हाथ में लेने की तकलीफ नहीं लेते। लेकिन जब उन्होंने देखा कि उनके शोषण के कार्यक्रम में यहाँ की राजसत्ता के कारण बाधा पहुँचती है और अनेक प्रकार की राजसत्ताओं का एक-दूसरे से विरोध है, इसलिए आसानी से हाथ में सत्ता आ सकती है। उन्होंने राजसत्ता हाथ में लेने का कार्यक्रम किया। व्यापार-वृद्धि के लिए राजसत्ता हाथ में लेना यह एक दर्शन और राजसत्ता यहाँ आसानी से हाथ में ले सकते हैं, यह दूसरी बात उनके ध्यान में आयी। आखिर उन्होंने राजसत्ता हाथ में ली। राज्य चलाने वाले सब राजा पराजित हो गये। फिर वे भी व्यापार पर ही जोर देते चले। कंपनी के हाथ में ही सत्ता रही और वह सत्ता उस व्यापार का अंश माना गया। सौ साल पहले १८५७ में गदर हुई। तब उन लोगों का राज्य करीब-करीब खतम होने पर आया। पर आखिर में वे जीत गये। कई साल बाद हिन्दुस्तान में कंपनी का राज्य हटा कर ब्रिटिश-पार्लमेंट ने बाकायदा अपनी सत्ता चलायी। उसके बाद जब पार्लमेंट की सत्ता आयी, तब उन्होंने राजनीति के ढंग से राज्य चलाना शुरू किया। फिर यहाँ के लोगों को नौकरी के लिए तैयार करना चाहा। यहाँ की विद्या खुद सीखना चाहा और अपनी विद्या भी यहाँ के लोगों को सिखाना चाहा। राज्य का सुव्यवस्थित सर्वत्र बन्दोबस्त करने की उनको इच्छा हुई और यह सब करने के लिए उनको नौकरी की बहुत आवश्यकता मालूम हुई, इसलिए उन्होंने एक 'सिविल सर्विस' निर्माण की। इंग्लैंड में परीक्षा देकर जो पास होते थे, उनको बड़ी नौकरी देते थे। नाम तो सेवा का था, परंतु फिर भी व्यापार की दृष्टि से हिंदुस्तान का किस तरह शोषण किया जा सकता है, उसका सिलसिलेवार कार्यक्रम जारी रहा। फिर उन्होंने यहाँ का राज्य छोड़ दिया। वह उन्होंने तब छोड़ा, जब उनको लगा कि राज्य-कारोबार हाथ में रखने का आग्रह रखेंगे तो यहाँ का व्यापार भी खो बैठेंगे। जब यह ध्यान में आया तब व्यापार कायम रखने के लिए उन्होंने राज्य छोड़ दिया। यहाँ की राज्य-सत्ता हाथ में तब ली थी, जब व्यापार के लिए वह जरूरी मालूम हुई, इस तरह अंग्रेजों का कुल दिमाग व्यापारी दिमाग है।

यह सब कहानी आप लोगों के सामने इसलिए रखी कि आपकी भी अब स्वराज्य की एक सर्विस है। अंग्रेजों की सर्विस ने काम इस तरह किया कि यहाँ के कच्चे माल का इंग्लैंड के यंत्रों के जरिये पक्का माल कैसे बन सकेगा और यहाँ के धंधे कैसे टूटें? अब आज की आपकी सर्विस को यह काम करना चाहिए कि उन्होंने जो बिगाड़ा, उसके विरुद्ध काम करके सुधारने का काम करना चाहिए। याने कहाँ-कहाँ, क्या-क्या कच्चा माल है, उसका पक्का माल यहाँ के यहाँ कैसे हो सकता है, गाँव के धंधे कैसे खड़े हो सकते हैं, यह सब आपको सोचना पड़ेगा। पुरानी सर्विस ने जो बर्बादी की है, वह ध्यान में रख कर उससे उल्टी क्रिया करने की जिम्मेवारी आप पर है। वे "सर्विस" में तो थे, लेकिन चलाते थे राज्य-सत्ता। आपके हाथ में सत्ता नहीं है, सेवा है। आपको वास्तविक सेवा करनी है। अब यह सर्विस का पूरा और सच्चा अर्थ आपको सिद्ध करना है। उन्होंने अपने लूटने के काम को 'सर्विस' ही नाम दिया। उन दिनों कुछ लोग मानते भी होंगे कि हम इस तरह इंग्लैंड के जरिये हिंदुस्तान की सेवा करते हैं। वे कहते भी थे कि हिंदुस्तान के लोग कपड़ा पहनना भी नहीं जानते हैं, नंगे-से रहते हैं, लँगोटी पहनते हैं, यहाँ सभ्यता है नहीं, तो हिंदुस्तान को कपड़ा पहनना हमने सिखाया इत्यादि। पर हिंदुस्तान में कपड़ा बनाने का उद्योग प्राचीन काल से है। यह बात सही है कि पहले हम जितने कपड़े पहनते थे, उससे ज्यादा कपड़ा पहनना हमने शुरू कर दिया है। आजकल कुछ लोगों को अपने शरीर का कुछ हिस्सा खुला रहता है, तो भी शर्म मालूम होती है।

गाँव के लोगों का उत्थान कैसे हो, उसके बारे में आपको अब काम करना है और सच्चे सेवक बनना है। वर्षों से वे लोग चूसे गये हैं, उनके धंधे तोड़े गये। नाना प्रकार के भेद किये गये और पैदा हुए। उनको किसी प्रकार की तालीम का अधिकार सौ वर्षों में नहीं मिला। उनके हाथ में खेती के सिवा कोई चीज नहीं रही और खेती भी चंद लोगों के हाथ में रही और और वह भी बेचने-खरीदने की चीज हो गयी। हिंदुस्तान की रीढ़ की हड्डी के समान जो देहात है, वही हड्डी करीब-करीब टूट-सी गयी है, उसको मजबूत बनाना, यह आप लोगों का और मेरा काम है। मैं एक लोक-सेवक के नाते लोगों में घूमता हूँ। आपको सरकार की तरफ से लोक-सेवक के नाते नियुक्त किया गया है। आपकी और हमारी जाति एक ही है। हम सीधे सेवक हैं। आप सरकार की मार्फत लोकसेवक हैं। हम सीधे लोकाश्रित हैं। आप भी लोकाश्रित हैं, क्योंकि लोगों के पास से पैसा उनके पास जाता है और फिर सरकार के जरिये आपके पास। हमको भी लोग खिलाते हैं और आपको भी। हमको सीधा खिलाते हैं और आपको चम्मच के जरिये, इतना ही फर्क है। आप-हम जो अन्न खाते हैं, वह गरीब लोगों के परिश्रम से पैदा हुआ अन्न ही खाते हैं। उनकी सेवा अच्छी तरह से हो, यह आपको सोचना है, हमने कुछ सोच रखा है।

पहली बात तो गाँव की जमीन की मालकियत मिटानी होगी। उसके बिना धंधे खड़े ही नहीं हो सकेंगे। इसलिए पहला काम है, ग्रामदान। मैं मानता हूँ कि आप लोगों का प्रथम कर्तव्य है गाँव के बेजमीनों को जमीन दिलाना और हो सके, तो ग्रामदान की कोशिश करना। यह मैं आपको इसलिए नहीं कहता हूँ कि यह एक धंधा मैंने उठा लिया है और आप भी वैसा ही उठा लें। अपना-अपना धर्म-प्रचार लोग करते ही हैं। ईसाई लोग सबको ईसाई बनाने की कोशिश करते हैं, वैसा यह ग्रामदान का प्रचार नहीं है, यह समझना चाहिये। ऐसी मेरी हॉबी नहीं है। वेदाध्ययन मेरी हॉबी है, हिंदुस्तान की भाषाओं का अध्ययन करना मेरी हॉबी है, मैं वह करता भी हूँ और किया भी है। वह मेरी रुचि है पर वह रुचि छोड़ कर यह ग्रामदान का काम लेना पड़ा है, क्योंकि इसके बिना हिंदुस्तान खड़ा नहीं होगा।

यदि यह सवाल पूछा जाय कि ये ऑफिसर्स गाँव वालों को प्रेरणा दें, क्या यह उनके कर्तव्य में शुमार होगा? अगर यह काम उनकी सेवा के क्षेत्र में नहीं आता, तो उनके लिए हिंदुस्तान में सेवा का क्षेत्र दूसरा है ही नहीं, क्योंकि वे गाँवों में जाकर करेंगे क्या? हाँ, दबाव न मुझे डालना चाहिए और न आपको। परंतु आप सरकारी नौकर हैं, इसलिए माना जाता है कि आप दबाव डाल सकते हैं। परंतु मुझे इस दबाव का ज्यादा डर नहीं है, क्योंकि आप ग्रामदान का प्रेशर (दबाव) डालने की कोशिश करेंगे, तो आप जनता से मार खायेंगे, क्योंकि यह ऐसी छोटी बात नहीं है कि दबाव डालने से मुफ्त में ग्रामदान हो जाय।

दूसरी बात आपको यह करनी होगी कि गाँव-गाँव के धंधे, जो आज टूट गये हैं, उनको खड़ा करने में गाँव वालों को समझाना होगा। खेती के बाद सबसे बड़ा धंधा बुनाई का है। उसके साथ कताई-बुनाई होनी चाहिए, तो वह खेती के बराबरी का बड़ा उद्योग हो जाता है। फिर आप भी उनके बनाये हुए कपड़ों को प्रेम से पहनेंगे। गाँव का गुड़, तेल, हाथ से कुटा हुआ चावल यह सब गाँव में ही हो। ऐसी कोशिश करनी पड़ेगी।

तीसरी बात गाँव में तालीम का इंतजाम करना होगा। तालीम कैसी हो उसके बारे में मेरे विचार "शिक्षण-विचार" पुस्तक में हैं। हरएक शिक्षक के हाथ में यह किताब हो, ऐसा मैं चाहूँगा। आप भी यह किताब लें।

इस प्रकार जिसका विनाश किया गया है उसको खड़ा करना, आपका मुख्य कार्य है। उसके बाद और भी कई काम करने होंगे, लेकिन वे बाद के काम होंगे। इसलिए पहले जो काम किये गये थे, उसके विपरीत काम करने होंगे। यह बात एक दफा आपके मन में जँच जाय, तो हर बात आप स्वतंत्र रूप से करेंगे। पहले आप अकड़ में घूमते थे। अंग्रेजी के सिवा बात नहीं करते थे। अब आप गाँव-गाँव में नम्रता से जायँगे। सिर्फ वहाँ की भाषा में ही नहीं, ऐसी भाषा में बात करेंगे कि गाँव वाले लोग उसे समझ भी सकें।

(सरकारी ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर्स के साथ, तिरुचिरै, तंजाऊर, २४-१)

---

www.vinoba.in

बिहार के गाँव-गाँव में १८ अप्रैल, '५७ का भू-वितरण-आयोजन

(वैद्यनाथप्रसाद चौधरी)

पूज्य विनोबाजी को बिहार से बिदा हुए दो वर्ष हो चुके। १ ली जनवरी १९५५ को पूज्य विनोबाजी ने बिहार से बिदा ली। १९५७ में भू-क्रान्ति सफल करने की दृष्टि से अनेकविध योजनाएँ बनायी जा रही हैं। कम-से-कम देश के उन तमाम भूमिहीनों को, जो भूमि पर काम करके ही जीते हैं, पर जिनको अपनी कही जाने वाली भूमि नहीं है, अपने बाजुओं का जोर आजमाने के लिए भूमि दिलाने का काम तो इस वर्ष पूरा होना ही चाहिए। इस लक्ष्य को सामने रख कर बिहार प्रदेश के भूदान-कार्यकर्ताओं ने भूक्रान्ति की जयन्ती के दिन, १८ अप्रैल १९५७ तक इस प्रान्त में भूदान में मिली सारी जमीन का बँटवारा समाप्त कर लेने का संकल्प किया है। निश्चय ही इस संकल्प की प्रेरणा पूज्य विनोबाजी के पळनी के उद्‌बोधक प्रवचन के निम्नलिखित वाक्यों से मिला था।

"इधर बिहारवालों से हमने कहा कि तुम्हारी जैसी बड़ी शक्ति हमने हिन्दुस्तान में अन्यत्र कहीं नहीं देखी, लेकिन कोई ऐसी चीज है, जिससे काम नहीं बन पा रहा है। खूब जोर लगाओ और सारी जमीन बाँट दो। वे कहते हैं, कानूनी दिक्कतें हैं। हमने कहा, अरे, जमीन अपने देश की है। जितना कानून से हो सकता है, उतना कानून से करो, बाकी बिना कानून से। कुछ झंझटें खड़ी होंगी, लेकिन उसकी चिन्ता नहीं करनी है।"

पळनी से लौटते ही प्रान्त के प्रमुख भूदान-कार्यकर्ताओं की एक सभा ४ दिसम्बर '५६ को पटने में की गयी, जिसमें भूदान-समितियों को १ ली जनवरी से विसर्जित किये जाने और उसके बाद भूदान-कार्य को अधिकाधिक व्यापक बनाने पर विचार किया गया। उसीमें यह भी निश्चय किया गया कि पूज्य विनोबाजी की यात्रा में या उसके बाद, बिहार में जितनी भूमि अब तक भूदान में मिली है, उस सारी भूमि का १८ अप्रैल '५७ तक वितरण समाप्त किया जाय। पुनः २४-२५ दिसंबर को अखिल भारतीय सर्व-सेवा-संघ के अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र मजूमदारजी के 'श्रम-भारती' में प्रान्त भर के भूदान-कार्यकर्ताओं का एक बृहद् सम्मेलन बुला कर आगे की कार्य-योजना की गयी और इस संकल्प को दुहराया गया।

व्यूह-रचना

भूदान के दानपत्रों में से बहुतों में दाता ने केवल, कितनी भूमि का वह दान देता है, यही लिख कर दानपत्र दे दिया है। कौनसी भूमि वे देंगे, इसका विवरण बाद में देने के लिए उस समय छोड़ा गया, वह अब तक प्राप्त नहीं हो रहा है। बड़े-बड़े राजा महाराजाओं के लाखों एकड़ के दानपत्र भी अधिकांश इसी प्रकार के हैं। अभी तक कार्यकर्ता-गण इन दानपत्रों की भूमि का विवरण प्राप्त करके वितरण का प्रयत्न करते रहे हैं, पर केवल डेढ़ लाख एकड़ से कुछ अधिक भूमि ही बाँटी जा सकी है। १८ अप्रैल तक यदि सारे दानपत्रों की भूमि बाँट डालनी है, तो निश्चय ही इसके लिए प्रान्त भर के लोगों का सहयोग अपेक्षणीय है। जो भूमि बाँटी जा चुकी है, उसे छोड़ कर करीब १० लाख एकड़ भूमि के दानपत्र बिहार के लगभग ३७ हजार गाँवों के दाताओं से प्राप्त हैं, जिनके वितरण का आयोजन करना है।

सोचा यह गया है कि प्रत्येक गाँव का उत्तरदायित्व लेने वाला एक व्यक्ति हो, जो पहले से अपने नाम पर लिये हुए गाँव के लोगों के सहयोग से उस गाँव के भूमिहीनों की सूचि तैयार करे। वह उनकी भूमिहीनता मिटाने के लिए कितनी भूमि की आवश्यकता है, उसका हिसाब लगायेगा। वह देखेगा कि उस गाँव में कितनी भूमि दान में मिली है, जिसका वितरण बाकी है। यदि दानपत्र में भूमि का ब्यौरा नहीं है, तो दाता से ब्यौरा प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा। यदि किसी कारण से दाता से ब्यौरा प्राप्त नहीं हो सकेगा, तो ग्रामीणों की सम्मति से उनकी भूमि में से उतनी भूमि वितरण के लिए प्राप्त करेगा। उस गाँव में सरकार की कोई जमीन भूमिहीनों में बाँटने के लायक यदि उपलब्ध है, तो उसकी भी तलाश करेगा। फिर सब भूमिहीनों की भूमिहीनता मिटाने के लिए यदि इतने से पूरा नहीं पड़ता है, तो वह शेष जमीन उस गाँव में जमीन रखने वाले भूमिवानों से प्राप्त करने का भी प्रयत्न करेगा।

इस प्रकार १८ अप्रैल को बिहार प्रान्त के ७१ हजार गाँवों में नहीं, तो जिन गाँवों से भूदान मिला है, ऐसे बिहार प्रान्त के आधे गाँवों में तो भी भूक्रान्ति-दिवस मना कर उन गाँवों की भूमिहीनता मिटाने का प्रयत्न किया जायगा। जहाँ यह भी संभव नहीं हो सकेगा, वहाँ कम-से-कम उस गाँव में भूदान में मिली हुई और बाँटने योग्य जमीन का बँटवारा ग्रामीणों की सभा करके, उनकी सम्मति से, उस दिन जरूर हो जाय, इसका आयोजन किया जायगा।

इस महान् संकल्प की पूर्ति में अपनी शक्ति लगाने की प्रान्त की सभी रचनात्मक संस्थाओं से अपील की गयी है। बिहार-खादी-ग्रामोद्योग-संघ के प्रान्त भर में स्थान-स्थान पर लगभग १५० केन्द्र हैं, जिनमें लगभग १००० कार्यकर्ता काम करते हैं और लगभग ५००० गाँवों में उन केन्द्रों द्वारा काम होता है। खादी-ग्रामोद्योग-संघ के नियामक मंडल ने तय किया है कि १८ अप्रैल को सभी केन्द्र बन्द रहेंगे। प्रत्येक कार्यकर्ता पहले से अपने नाम पर लिये गाँव में पूर्व-तैयारी करके रखेंगे। और १८ अप्रैल को उस गाँव में जाकर उपरोक्त कार्यक्रम को सम्पन्न करेंगे। खादी-ग्रामोद्योग-संघ के कार्यक्षेत्र के १००० गाँवों में संघ के कार्यकर्ता स्वयं पहुँच सकेंगे, पर अपने कार्य-क्षेत्र के शेष ४००० गाँवों के लिए भी वे कार्यकर्ता जुटायेंगे।

बिहार प्रान्तीय ग्राम-पंचायत-परिषद ने भी अपनी कार्य समिति की बैठक बुला कर तय किया है कि प्रत्येक ग्राम-पंचायत अपने क्षेत्र में पड़ने वाले गाँवों की भूदान की भूमि १८ अप्रैल को वितरित करने का आयोजन करे। प्रान्त भर में लगभग ९००० ग्राम-पंचयतें स्थापित हैं। 'श्रम-भारती' खादीग्राम ने भी अपनी संस्था बन्द कर इसी कार्य में अपनी पूरी शक्ति लगाने का निश्चय किया है। कस्तूरबा-केन्द्र, पूसा; ग्राम-निर्माण-मंडल, सोखोदेवरा; सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा; अम्बर-विद्यालय, लक्खीसराय एवं पूसा रोड तथा अन्य रचनात्मक संस्थाओं ने भी इस दिशा में कार्य प्रारम्भ कर दिया है। आदिम जाति-सेवा-मंडल, संताल पहाड़िया सेवा-मंडल, हरिजन-सेवक-संघ, विद्यालयों के शिक्षकों, विद्यार्थियों आदि का भी सहयोग इस कार्य में मिलेगा, ऐसी आशा है। यद्यपि राजनैतिक दलों के कार्यकर्ता-गण अभी चुनाव-संघर्ष में लगे हैं, परन्तु १२ मार्च तक चुनाव समाप्त हो जाता है। फिर १८ अप्रैल के कार्यक्रम को सफल करने में उनका भी सहयोग अवश्य ही प्राप्त हो सकेगा। दाताओं से भी अपील की गयी है कि वे खुद कार्यकर्ता बन कर अपनी दान दी हुई भूमि का बँटवारा करा दें।

बिहार-सरकार के रेवेन्यू विभाग से भी इस कार्य को सम्पन्न करने में योग्य सहायता प्रदान करने की अपील की गयी है। आशा है, सबका सहयोग मिलेगा और १८ अप्रैल का यह महान् संकल्प पूरा होगा। १८ अप्रैल के कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए प्रान्त में उपयुक्त वातावरण निर्माण करने के हेतु तथा एक-एक गाँव का उत्तरदायित्व लेनेवाले कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने की दृष्टि से होली के बाद १७ मार्च से ३१ मार्च के अभ्यन्तर प्रान्त भर के सभी सब-डिविजनों में उस-उस सब-डिविजन के १८ अप्रैल के कार्यक्रम में योग देने के लिए आनेवाले कार्यकर्ताओं के तीन-तीन दिन के शिविर का आयोजन किया जा रहा है। गाँव-गाँव का उत्तरदायित्व लेने वाले कार्यकर्ताओं को पहले से तलाश करके उनको इन शिविरों में बुलाने का प्रबन्ध किया जायगा।

आशा है कि श्री धीरेन्द्र भाई, दादा धर्माधिकारी, जयप्रकाश बाबू एवं श्रीबाबू का १७ मार्च से ३१ मार्च तक का समय प्रांत के एक-एक डिविजन के लिए भ्रमण और मार्गदर्शन करने के लिए मिल सकेगा। इसी प्रकार प्रत्येक शिविर के कार्यक्रमों के लिए मार्च के उत्तरार्ध में दो सप्ताह में कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन करने के लिए अन्य महानुभावों को भी आमंत्रित किया जायगा।

प्रान्त भर में ५२-५३ स्थानों में सबडिविजनल शिविर होंगे। इन नेताओं का भ्रमण होगा। शिविर में कार्यकर्ताओं के बीच तथा आम सभाओं में भाषण होंगे। इससे १८ अप्रैल के कार्यक्रम को सफल करने की दृष्टि से अनुकूल वातावरण का निर्माण हो सकेगा और आशा है ईश्वरानुग्रह से १८ अप्रैल का कार्यक्रम होली-दिवाली की तरह देश भर में एक दिन में भूमिहीनता मिटाने का पर्व मनाने का बाबा का जो स्वप्न है, उसका एक अच्छा रिहर्सल साबित हो सकेगा!

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ
१५ फरवरी सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

स्वराज्य के बाद ग्रामराज्य !

(वीनोबा)

महाभारत में एक कहानी है। बैल ब्रह्मदेव के पास गये। शीकायत थी की आजकल कीसान हमें सताते हैं। ब्रह्मदेव ने उन्हें कहा, "देखो, जो कीसान बैल की चींता नहीं करेगा, उसे खीलाये बगैर खायेगा, तो उनके खेतों की उन्नती नहीं होगी!" ब्रह्मदेव ने यह शाप दीया और कह दीया की मरने के बाद उनको अच्छी गती भी नहीं मीलेगी। ब्रह्मदेव ने बैलों के लीए इतना पक्षपात कीया, तो क्या वह मजदूरों के लीए पक्षपात नहीं करेगा?

वेद ने तो कहा है:—"नार्यमणं पुष्यती नो सखायं। केवलाद्यो भवती केवलादी।—याने जो अपने भाई का पोषण नहीं करता, मददगारों का पोषण नहीं करता, वह अन्न नहीं, शाप ही खाता है!"

भाईयो, इस मोह का अनुभव हमें भारत में आता है, दूसरे देशों में भी आता है। असंतोष सर्वत्र भरा है। उसके लीए पुलीस, वकील, कोर्ट, जेल, लष्कर, सबका उपयोग करते हैं, याने बीलकुल बेकारों की जमात खड़ी कर दी। बेकार चोरी करता है और उसका फैसला देने के लीए दूसरा बेकार मनुष्य खड़ा कर देते हैं। उसे जेल में भेज देते हैं। यह सही रास्ता नहीं है। यह जेल, सज़ा, न्यायाधीश, न्याय सब बेकार हैं! कारण के मूल में जाकर ही उस पर प्रहार करना चाहीए। लेकीन वह नहीं करते। उसके बदले में दंडशक्ती का उपयोग करते हैं। चोर को सज़ा देने के बजाय उसे ज़मीन देनी चाहीए। गांव के लोग गांव का एक परीवार बना दें, कुल ज़मीन गांव की करें, मालीक कोई नहीं रहे, तो बहुत लाभ होगा। फीर बेकार लोग नहीं रहेंगे। सबको काम मीलेगा। हम सब एक मानव बनेंगे। हमारे परीवार में सबको दाखील करेंगे। काम की योजना का फल सब मील कर भोगेंगे। इसे कहते हैं ग्रामदान। इसके आधार पर ग्राम-राज्य और रामराज्य होगा। स्वराज्य मीला, अब ग्रामराज्य करना है।

स्वराज्य के बाद ग्रामराज्य नहीं बनता है, तो स्वराज्य की ताक़त ही हम खोते हैं। स्वराज्य के बाद देश पर पचासों प्रकार की आपत्तीयां आती हैं। उन सब आपत्तीयों के लीए हमें तैयार रहना चाहीए। सब गांव अपने-अपने पैरों पर खड़े होंगे। गांवों में कोई झगड़े नहीं रहेंगे। हर एक गांव मील कर काम करेगा, तब तो देश की ताकत बनेगी और बाहर से आपत्ती आयेगी, तो उसका भी सामना कर सकेंगे।

तीरुक्काट्टुपल्ली, तंजावूर, २१-१-'५६.

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ख = छ ; संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न से।

सर्वोदय की दृष्टि से :

सर्वोदय और चुनाव

आम चुनावों के बारे में सर्वोदय-विचार की क्या दृष्टि है, यह अ० भा० सर्व-सेवा-संघ ने पिछले अगस्त में एक प्रस्ताव के जरिये जाहिर किया था। जिन्होंने वह प्रस्ताव पढ़ा है, उनकी याददाश्त ताजा करने के लिए तथा जिन्होंने उस वक्त नहीं पढ़ा हो, उनकी जानकारी के लिए वह प्रस्ताव फिर से यहाँ दिया जा रहा है। उससे चुनावों के प्रति सर्वोदय का जो दृष्टिकोण है, वह स्पष्ट होगा।

सर्व-सेवा-संघ का चुनाव-प्रस्ताव

"सर्व-सेवा-संघ का लक्ष्य अहिंसक समाज-रचना है। उसका यह विश्वास है कि हुकूमत की मार्फत अहिंसक समाज कायम नहीं किया जा सकता। लोकतंत्र का आखिरी आधार लोकसम्मति है, यह मानी हुई बात है। उसकी सिद्धि के लिए दंड-निरपेक्ष समाज-व्यवस्था की ओर कदम बढ़ाना आवश्यक है। अतएव सर्व-सेवा-संघ सत्ता-प्राप्ति की राजनीति में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी प्रकार का हिस्सा नहीं ले सकता। जिस पक्ष के हाथ में हुकूमत है या जो पक्ष अपने हाथ में हुकूमत लेना चाहते हैं, उन सबकी तरफ सर्व-सेवा-संघ तटस्थ बुद्धि से देखता है। आज लोकतंत्र 'पक्षनिष्ठ' है। उसको 'लोकनिष्ठ' बनाने के लिए पक्ष-निरपेक्ष और पक्षातीत भूमिका की वह आवश्यकता मानता है। उसे किसी भी एक पक्ष की हार या जीत में कोई विशेष दिलचस्पी नहीं हो सकती। कारण, जाहिर है कि मत-परिवर्तन की प्रक्रिया हार और जीत से परे है। हम किसीकी हार या जीत चाहेंगे, तो दोनों में से किसीका भी हृदय-परिवर्तन करने की पात्रता खो देंगे। इसलिए सर्व-सेवा-संघ न तो चुनावों में स्वयं किसी तरह का हिस्सा ले सकता है और न किसी व्यक्ति को चुनाव के विषय में किसी प्रकार की सलाह देना उपयुक्त ही मानता है।

"लेकिन आज की हालत में सर्वोदय-सिद्धान्तों को मानने वाले कुछ व्यक्ति मतदान के अपने अधिकार का प्रयोग करना चाहेंगे। वे स्वाभाविक ही शान्तिमय साधनों में विश्वास न करने वाले अथवा सम्प्रदायवादी उम्मीदवारों को अपना वोट देना उचित नहीं मानेंगे। जो व्यक्ति भिन्न-भिन्न राजनीतिक पक्षों के सदस्य हैं, वे यह तो जानते ही हैं कि नागरिक के लिए वोट देने का कर्तव्य जितना पवित्र माना जाता है, उतना ही विशिष्ट परिस्थिति में वोट न देने का कर्तव्य भी पवित्र है। इसलिए उनका पक्ष गलत आदमियों को उम्मीदवारों के लिए खड़ा करे, तो हरएक लोकनिष्ठ नागरिक का यह कर्तव्य हो जाता है कि पक्ष का सदस्य होते हुए भी, वह उस उम्मीदवार को वोट न दे।"

हिंदुस्तान में यह दूसरी बार आम चुनाव हो रहा है। पिछले चुनाव में तथा उसके बाद के पाँच वर्षों में लोकसभा तथा विधान-सभाओं के लिए जो कोई छिटपुट चुनाव बीच-बीच में होते रहे, उनका अनुभव जो आया है, उस पर से आम तौर से जन-साधारण में तथा खास तौर से विचारवान लोगों में, चुनावों के प्रति अरुचि और घृणा पैदा हो गयी है। वास्तव में ये आम चुनाव हैं ही नहीं, बल्कि पार्टियों के नाम पर कुछ चंद व्यक्तियों द्वारा चुने हुए लोगों को जनता के सामने खड़े करके उसका मत माँगे जाने का एक नाटक मात्र है। देश के अनेक अच्छे-अच्छे व्यक्तियों का इस चुनावों से संबंध जरूर है, पर शायद वह इसीलिए कि उन्हें दूसरा बेहतर रास्ता या तो नज़र नहीं आ रहा, या उसे अपनाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे। यह देश का दुर्भाग्य है। अगर इन कुछ अच्छे लोगों का चुनावों से संबंध नहीं होता, तो बिना किसी हिचकिचाहट से यह कहा जा सकता था कि ये चुनाव एक तरह से भोली जनता के खिलाफ एक बड़ा षड़यंत्र है। स्वतंत्र मतदान का तो नाम है, पर वास्तव में पैसे और संगठन के बल पर मत खरीदे जाते हैं। एक-एक सीट के लिए हजारों और कहीं-कहीं लाखों रुपया खर्च होता है। यह रुपया पूँजीपति और कारखानेदार मुहय्या करते हैं। इस आशा पर कि जीते हुए उम्मीदवार के जरिये तरह-तरह की सुविधाएँ, लाइसेन्स, परमिट आदि प्राप्त करके यह रकम वापस वसूल हो जायगी। इसी चुनाव में केवल एक टाटा के खजाने से ही काँग्रेस को २० लाख रुपयों की मदद दी गयी है, ऐसा कहा जाता है। उधर काँग्रेस वालों का रोष है कि दूसरी पार्टियाँ चुनाव के लिए विदेशों से रुपयों की मदद प्राप्त कर रही हैं। छोटे-मोटे सेठों के साथ सौदा करके सीटों का बेचा जाना तो साधारण बात है। पार्टियों के अंदर खड़े होने की इजाजत (टिकट) प्राप्त करने

www.vinoba.in

के लिए षड्यंत्र किये जाते हैं और एक-दूसरे की व्यक्तिगत निन्दा की जाती है। फिर चुनावों में मत प्राप्त करने के लिए जात-पाँत, धर्म-संप्रदाय आदि तरह-तरह के भेद-भावों को उभाड़ा जाता है। इस प्रकार इन चुनावों के ज़रिये राष्ट्र का समूचा जीवन कलुषित और जर्जर बनाया जा रहा है। कोई ताज्जुब नहीं है कि हजारों वर्ष की संस्कृति और सभ्यता के संस्कार जिनके खून में पड़े हुए हैं, ऐसे भारतीय नागरिकों को चुनावों से सहज नफरत पैदा हो गयी है।

पर सिर्फ चुनावों की बुराई से अभिभूत होकर उनसे अलग रहने से किसीको व्यक्तिगत संतोष भले ही हो जाय, राष्ट्र की दृष्टि से समस्या का हल नहीं होता। सर्व-सेवा-संघ के प्रस्ताव से जाहिर होगा कि सर्वोदय-विचार के लोग जो चुनावों से अलग है, उनके पीछे एक तात्त्विक भूमिका है और चुनावों के ज़रिये ही राजकरण या राष्ट्र की व्यवस्था चल सकती है। इस भ्रामक मान्यता की जगह उसमें एक-दूसरे विकल्प का संकेत है। मनुष्य की सच्ची आजादी अन्दरूनी संयम की भावना से पैदा हुए स्वशासन के ज़रिये ही सिद्ध हो सकती है और इस प्रकार के आत्म-नियंत्रण के अभाव से जितनी हद तक मानव-जीवन में बाहरी राजसत्ता का नियंत्रण और संचालन रहेगा, उतनी हद तक वह गुलाम रहेगा। इसलिए आज से ही हमारी कोशिश लोगों में स्वशासन और आत्मनिर्भरता पैदा करने की तथा केन्द्रित राजसत्ता की आवश्यकता उत्तरोत्तर कम करते जाने की होनी चाहिए। बहुत से लोग इस तरह की विकेन्द्रित व्यवस्था में तो विश्वास करते हैं, पर साथ ही वे ऐसा सोचते हैं कि यह विकेन्द्रित रचना भी मौजूदा केन्द्रित राज्य-सत्ता के ज़रिये, यानी कानून या बाहरी व्यवस्था के परिवर्तन के ज़रिये हासिल की जा सकती है। यह निरा भ्रम है। वे यह भूल जाते हैं कि राज्य-सत्ता के ज़रिये अगर हम शासन का विकेन्द्रीकरण करने चलेंगे, तो इस प्रक्रिया में उल्टे हम राजसत्ता को ही और ज्यादा मजबूत करेंगे। सच्चे लोक-तंत्र की स्थापना लोगों के अपने पुरुषार्थ और कोशिश से ही हो सकती है। भूदान-यज्ञ-आंदोलन में ग्रामदान और ग्राम-संकल्प की प्रक्रिया के ज़रिये इसकी संभावना भी जाहिर हो चुकी है। लोक-शक्ति या लोगों का पुरुषार्थ कानून अथवा बाहरी दबाव से जाग्रत नहीं हो सकता। उसे जाग्रत करने का उपाय विचार-परिवर्तन और विचार-परिवर्तन के ज़रिये मिलने वाली आचार की प्रेरणा के अलावा दूसरा हो नहीं सकता।

इस प्रकार सर्वोदय-विचार और उसके आधार पर संचालित भूदान-यज्ञ-आंदोलन ने एक नया भावात्मक (पॉज़िटिव) विकल्प या रास्ता दुनिया के सामने उपस्थित किया है। प्रचलित राजनीति की जगह 'लोकनीति' की स्थापना उसका लक्ष्य है। इसलिए सर्वोदय-विचार में मानने वालों को चुनावों में या दलगत राजनीति में दिलचस्पी नहीं है। चुनाव के आधार पर ही जनतंत्र चल सकता है, यह मान्यता गलत है। वह कुंठित विचार का द्योतक है। वास्तव में तो आज की चुनाव-पद्धति सच्चे जनतंत्र का गला घोंटने वाली प्रक्रिया है। जनता को उससे सावधान रहने की जरूरत है। सर्वोदय में विश्वास रखने वाले लोगों और कार्यकर्ताओं को चुनाव में अपनी शक्ति खर्च करने के बजाय अपनी पूरी ताकत लोक-शक्ति जाग्रत करने के काम में लगानी चाहिए।

—सिद्धराज ढड्ढा

चुनाव-कमिश्नर की सामयिक सलाह :

चुनावों में मतदान का मतलब है—अपनी इच्छा से और बिना किसी बाहरी दबाव के या लालच के दिया हुआ मत। पर स्वार्थ और सत्ता के लोलुप लोगों द्वारा मतदाताओं पर तरह-तरह के बेजा दबाव डालना एक मामूली बात हो गयी है। हिन्दुस्तान के चुनाव-कमिश्नर श्री सुकुमार सेन ने इस प्रकार बेजा दबाव डालने वाले उम्मीदवारों से मतदाताओं को सावधान करते हुए अभी हाल ही में जो सलाह दी है, वह आगामी आम चुनावों के सिलसिले में हर मतदाता के ध्यान में रखने लायक है। श्री सेन ने कहा है :

> "अगर कोई उम्मीदवार या उसका समर्थक बेजा तरीके से मत माँगने आता है, तो एक आज़ाद तथा जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हर मतदाता को चाहिए कि वह उसे अपना व्यक्तिगत अपमान समझे। मुझे आशा है कि जनता हर उम्मीदवार के रवैये पर सतर्कता और गहराई से नजर रखेगी और लोग मजबूती से तथा कठोरता से ऐसे उम्मीदवार को मत न देकर हरायेंगे जो मत हासिल करने के लिए बेजा और गलत तरीके काम में लाकर देश के सार्वजनिक जीवन को जहरीला और कलुषित बनाता है।"

—सिद्धराज ढड्ढा

बीच की राह !

(विनोबा)

यहाँ पुण्य-क्षेत्र में विशेष पुण्य भरा है, इसलिए हमारा जीवन कैसा भी चले, तो कोई परवाह नहीं। उस पुण्य के कारण कुछ-न-कुछ लाभ मिल जायगा, इस तरह लोग मानते हैं, तो यह मूढ़ विश्वास है। अगर हम अपनी अंतरात्मा में जाग्रत नहीं हैं, तो कहीं की भी हवा हमको नहीं बचा सकती। परंतु अगर हम सज्जनता को अंदर लेने के लिए तैयार हैं और कहीं ऐसे पुण्य के अंश का आधार मिलता है, तो वहाँ हमें सत्कार्य की प्रेरणा मिल सकती है। जिन धर्म-स्थानों पर लोगों की श्रद्धा है, जहाँ तपस्वियों ने तपस्या की है, जहाँ भक्तों का जीवन-चरित्र बना है, उस स्थान से मनुष्य को कुछ लाभ तो जरूर मिलता है।

सब संतों ने एक ही बात अलग-अलग तरीके से कही है कि "मैं और मेरा" का भाव मिट जाना चाहिए। मनुष्य को आसक्ति छोड़ देनी चाहिए। यह चीज लोग सुनते हैं, मानते भी हैं, चंद लोग तदनुसार चलते भी हैं; परंतु बहुत लोग या कुल समाज उस पर अमल नहीं करता है, अमल कर नहीं सकते हैं। आज सब लोग जिस हालत में हैं, उसे सोचते हुए लगेगा कि यह मानना गलत नहीं है। मानना ही पड़ेगा कि लोगों के लिए वह उपदेश अमल में लाना आसान बात नहीं है। हाँ, इसमें कोई शक नहीं है कि कुछ व्यक्ति उस पर अमल कर सकते हैं और ऐसा व्यक्तिगत अमल होता है, तो भी एक हवा पैदा होती है।

ममत्व-छोड़ने का अर्थ वे यह समझते हैं कि घर और परिवार छोड़ कर समाज-शरण या भगवान-शरण हो जाना। अपना सब त्याग कर दिया, तो वह संन्यास हो गया! यह चीज अगर बाबा स्वयं नहीं कर पाता, तो वह आपके सामने आकर ममत्व छोड़ने की बात कर ही नहीं सकता था। बाबा ने इस बात पर स्वयं अमल करने की कोशिश की है। लेकिन जैसे पुराने महापुरुषों की बात लोगों ने सुन ली, उसी तरह बाबा के लिए भी आदर, श्रद्धा रख कर उसकी बात सुन ली! लोगों को इच्छा हो गयी तो बाबा की भी गिनती ऐसे महापुरुषों में कर ली! लेकिन अपनी जमात में बाबा को लेने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। उसकी 'ममत्व तजने' की बात पर लोग अमल नहीं करेंगे। अगर हम चाहते हैं कि इस उपदेश पर समाज द्वारा अमल हो और इसके आधार पर समाज का जीवन-निर्माण हो, तब उसके लिए कोई मार्ग भी दिखाना होगा। लोग अपने बाल-बच्चों के लिए सर्वस्व का त्याग करते हैं। जो स्नेह और आसक्ति है, उसे वे छोड़ दें, ऐसा अगर हम कहेंगे, तो क्या बहनें छोड़ देंगी? ये बातें उन्होंने पचासों दफा सुनी हैं। इसलिए व्यक्तिगत संन्यास-धर्म, व्यक्तिगत मुक्ति-धर्म जब लोगों के सामने रखा जाता है और लोग उस पर यदि अमल नहीं कर पाते हैं, तो उसमें उनका कोई दोष नहीं है।

हम अपने मन में सोच रहे थे कि क्या उसके लिए कोई रास्ता है, तो हमको एक रास्ता सूझा। उस रास्ते से सब लोग जा सकते हैं, ऐसा हमको लगता है। "मेरा-मेरा" नहीं कहना चाहिए। अपने पास कोई आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। इसका आसान तरीका है, परिवार को बढ़ाना। परिवार का त्याग करने की जरूरत नहीं। मैं बहनों से कहूँगा कि "ये मेरे लड़के" ऐसी आसक्ति क्या पकड़ रखती हो? छोड़ दो उनको और निकल पड़ो बद्री-केदारनाथ की यात्रा को, तो उनसे यह नहीं बनेगा। पर हम उनसे यह कहना नहीं चाहते हैं कि तुम अपने बच्चों को प्यार न करो! प्यार में कोई दोष भी नहीं है, बल्कि जिनमें प्यार है, वे परमेश्वर के परम प्रिय भक्त हैं। लेकिन हम उनसे यह कहेंगे गाँव के सभी बच्चों को प्यार करो। घर में जो दो-चार लड़के हैं, सिर्फ वे ही तुम्हारे बच्चे नहीं हैं। गाँव के जितने बच्चे हैं, वे भी तुम्हारे हैं, यों समझो। तुमको फिर न बद्री केदार जाने की जरूरत है, न किसी पुण्यक्षेत्र में जाने की अब ये बहनें नहीं कहेंगी कि तुम्हारा यह उपदेश हमसे बनेगा नहीं! कुटुम्ब छोड़ना कठिन है, लेकिन कुटुम्ब बढ़ाना मुश्किल नहीं है! स्त्री-बच्चों का प्रेम तोड़ कर, छोड़ कर निकल पड़ना संभव नहीं है। दुनियाँ की दुःख-निवृत्ति के लिए बुद्ध ने वह किया, परंतु बुद्ध भगवान् तो २५०० साल में एक हो गये। दस-बीस हजार लोग गये, लेकिन करोड़ों नहीं। इसलिए मार्ग तो वह होगा, जो करोड़ों के लिए अनुकूल हो। हजारों लोग तैरना सीख कर, बिना पुल के सामने के किनारे पर जा सकते हैं, परंतु करोड़ों लोग तैर कर नहीं जा सकते, वहाँ पुल की ही जरूरत है। हम समझते हैं कि परिवार को बढ़ाने का यह मार्ग आसान है। सब लोग उस पर जा सकते हैं।

(तिरुवेय्यार, तंजाऊर २२-१-५७)

www.vinoba.in

धन के उपयोग का तरीका

(श्रीअरविंद)

सारा धन भगवान् का है और यह जिन लोगों के हाथ में है, वे उसके ट्रस्टी (रक्षक) हैं, मालिक नहीं। आज यह उनके पास है, कल कहीं और चला जा सकता है। जब तक यह इनके पास है, तब तक वे इस ट्रस्ट का पालन कैसे करते हैं, किस भावना से करते हैं, किस बुद्धि से उपयोग करते हैं और किस काम में करते हैं, इस पर सब कुछ निर्भर करता है।

अपने लिए जब तुम धन का उपयोग करो, तब जो कुछ तुम्हारे पास है, जो कुछ तुम्हें मिलता है या जो कुछ तुम ले आते हो, उसे माता का समझो। स्वयं कुछ भी मत चाहो। पर वे जो कुछ दें, उसे स्वीकार करो और उसी काम में उसे लगाओ, जिसके लिए वह तुम्हें दिया गया हो। नितांत निःस्वार्थ, सर्वथा न्यायनिष्ठ, ठीक-ठीक हिसाब रखने वाले और तफसील की एक-एक बात का ध्यान रखने वाले उत्तम ट्रस्टी बनो। सदा यह ध्यान रखो कि तुम जिस धन का उपयोग कर रहे हो, वह उनका है, तुम्हारा नहीं। फिर उनके लिए जो कुछ तुम्हें मिले, उसे श्रद्धा के साथ उनके सामने रखो, अपने या और किसीके काम में उसे मत लगाओ।

कोई मनुष्य धनी है, केवल इसीलिए उसके सामने सिर नीचा मत करो, उसके आडंबर, शक्ति या प्रभाव के वशीभूत मत हो। माता के लिए जब तुम किसीसे कुछ माँगो, तो तुम्हें यह प्रतीत होना चाहिए कि माता ही तुम्हारे द्वारा अपनी वस्तु का किंचित् अंश मात्र माँग रही है और जिस व्यक्ति से इस तरह माँगा जायगा, वह इसका क्या जवाब देता है, उसीसे उसकी परीक्षा होगी।

यदि धन के दोष से तुम मुक्त हो, पर साथ ही संन्यासी की तरह तुम उससे भागते नहीं हो, तो भागवत् कर्म के लिए धनं जय करने की बड़ी क्षमता तुम्हें प्राप्त होगी। मन का समत्व, किसी स्पृहा का न होना और जो कुछ तुम्हारे पास है और जो कुछ तुम्हें मिलता है और तुम्हारी जितनी भी उपार्जन शक्ति है, उसका भागवती शक्ति के चरणों में तथा उन्हींके कार्य में सर्वथा समर्पण, ये ही लक्षण हैं, धन-दोष से मुक्त होने के। धन के संबंध में या उसके व्यवहार में किसी प्रकार की मन की चंचलता, कोई स्पृहा, कोई कुण्ठा, किसी-न-किसी दोष या बंधन का-ही निश्चित लक्षण है।

इस विषय में उत्तम साधक वही है, जो दरिद्रता में रहना आवश्यक हो जाने पर वैसा रह सके और उसे किसी अभाव की कोई वेदना नहीं या उसके अंदर भागवत्-चैतन्य के अबाध क्रीडन में कोई बाधा न पड़े और वैसे ही यदि उसे भोग-विलास की सामग्री के बीच में रहना पड़े, तो वह वैसा भी रह सके और कभी एक क्षण के लिए भी अपने धन-वैभव या भोग-विलास के साधनों की इच्छा या आसक्ति में न जा गिरे, असंयम का दास न हो अथवा धन रहने पर जैसी आदतें पड़ जाती हैं, उनसे बेबस न हो जाय। भागवती इच्छा और भागवत् आनंद ही उसका सर्वस्व है।

विज्ञान-कृत सृष्टि में धन-बल भागवती शक्ति को पुनः भास करा देना होगा और माँ भागवती अपनी सृष्टि-बल की प्रेरणा से जो प्रकार निर्धारित करेंगी, उसी प्रकार से उसका विनियोग एक नवीन दिव्यकृत, प्राणिक और भौतिक जीवन के सत्य, सुन्दर, सुसंगत संघटन और सुव्यवस्था से करना होगा। पर पहले यह धन-शक्ति उनके लिए जीत कर लौटा लानी होगी और इस विजय-संपादन में वे ही सबसे अधिक बलवान् होंगे, जो अपनी प्रकृति के इस हिस्से में सुदृढ़, उदार और अहंकार-निर्मुक्त हैं, जो कोई प्रत्याशा नहीं करते, अपने लिए कुछ बचा कर नहीं रखते या किसी संकोच में नहीं पड़ते, जो परम शक्ति के विशुद्ध शक्तिशाली यंत्र हैं।

('माता' से सादर)

दानी के विचार

महाराज भोज एक आदर्श दानी थे। दान करते-करते उनका खज़ाना खाली हो चला। तब मंत्री-गण उन्हें दान बन्द करने की सलाह तो न दे सके, किंतु उन्होंने महाराज की बैठक के सामने एक श्लोक का चरण लिख दिया : "आपदर्थं धनं रक्षेत् ।" (आपत्ति-काल के लिए धन की रक्षा करनी चाहिए।)

महाराज भोज इसको पढ़ कर मंत्रियों का आशय समझ गये। उन्होंने वहीं पर लिख दिया: "श्रीमतां कुत आपदः" (श्रीमानों को आपत्ति कैसी ?)

तब मंत्री ने फिर से लिख दिया : "दैवात् क्वचित् समाप्नोति।" (दुर्भाग्य से कभी आ जाय तो ?)

तब महाराज ने इसका उत्तर लिखा : "संचितोऽपि विनश्यति।" (जब दुर्भाग्य आयेगा, तो संचित लक्ष्मी भी नष्ट हो जायगी।)

इससे आगे मंत्री को लिखने का साहस नहीं हुआ।

("जैन जगत्" से)

विनोद की घड़ियों में : ३.

(श्रीकृष्णदत्त भट्ट)

उस दिन एक दाढ़ीवाले से ही बाबा का पाला पड़ गया !

उसे भी दाढ़ी, बाबा को भी दाढ़ी।

उसकी दाढ़ी काली, बाबा की दाढ़ी सफेद।

लम्बाई में दोनों की दाढ़ियाँ बराबर !

यों तो बाबा की पार्टी में कई दाढ़ीवाले रहते हैं, सची भाई ने तो अपनी मूर्ख-मंडली की अनिवार्य शर्त बना रखी थी—'दाढ़ी !' स्वयं बने वे सेक्रेटरी और गोविन्दन् को बना रखा था प्रेसीडेण्ट। कुर्नूल में जब प्रेसीडेण्ट की हजामत बन गयी, तो नगीन भाई को उन्होंने यह मजेदार पद सौंप दिया था। पर भद्राचलम् के इन दाढ़ीवाले भाई ने सबको मात दे दी।

आप बोले : "मैंने यह दाढ़ी इसलिए रख छोड़ी है कि अहिंसा-व्रत के पालन के लिए दाढ़ी रखनी ही चाहिए। बाल मुड़वाने से हिंसा होती है।

बाबा : "आप इसे कभी नहीं कटवाते ?"

दाढ़ीवाला : "कभी नहीं। माँ मरी थी, तो लोगों ने ज़बरदस्ती मुझे पकड़ कर दाढ़ी मुड़वा दी थी। दाढ़ी की वजह से कुछ लोग मुझे 'पागल' कहते हैं, कुछ लोग 'मूर्ख'; पर कोई कुछ कहे—मैं दाढ़ी रखूँगा ज़रूर। **दाढ़ी बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।**"

बाबा : "मैं तो कभी-कभी दाढ़ी घुटवा लेता हूँ, तब तो मुझे मोक्ष नहीं मिलेगा ?"

दाढ़ीवाला : "तब तो मुश्किल है। बिना दाढ़ी के मोक्ष कैसा ?"

बाबा मेरी ओर देख कर मुस्कराये। बोले : "तुम तो साहित्यिक हो। सुन रहे हो इस भाई की बातें ?"

"दाढ़ी बिना मोक्ष नहीं मिलेगा।"—हम सब यह सुन कर देर तक हँसते रहे।

पर, अहिंसा के कारण अन्न छोड़ कर फलाहार करने वाले, मालमत्ता लेकर पत्नी के भाग जाने पर भी उससे कुछ न कहने वाले इस दाढ़ीवाले भाई की सब बातों को हम 'मूर्खता' कहें, तो किसीको भी हमारे मूर्ख होने में संदेह न रह जायगा।

* * *

अपने जन्म-दिवस पर बाबा ने कहा था कि हमें लगता है कि हम सब अभी बचपन में ही हैं। हमारी बाल-गोपाल-मंडली इकट्ठी है और हमारा यह खेल चल रहा है।

बाबा सचमुच बालक हैं।

वही मस्ती, वही विनोद, वही खिलखिलाहट।

वैसी ही उछल-कूद, वैसी ही शरारत। कभी पानी में भींगना, कभी पहाड़ों पर चढ़ना, कभी नदी-नालों को झूम-झूम कर पार करना, कभी ढोल बजाना, कभी बाँसुरी; कभी गाना, कभी नाचना-कूदना।

यह सब बचपन नहीं तो क्या है ?

भोलापन, सरलता, निष्कपटता, निर्विकारिता—बच्चों के सभी गुण बाबा में मौजूद।

* * *

एक हफ्ते बाद रास्ते में 'बूढ़े बच्चों' का प्रसंग चल रहा था कि मैंने टोक दिया : "बाबा, जवाहरलाल भी तो बच्चे हैं।"

बाबा बोले : "ऊहुँ, वे बच्चा नहीं हैं। बाबा बच्चा है। व्यास बच्चा है—नेहरू बच्चा नहीं।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि बापू के बाद उन पर बहुत बोझ पड़ा। साल भर वे बड़े उदास रहे। तब से वे बच्चे नहीं रहे, जवान हैं।"

मैंने मंजूर कर लिया—

साठ का विनोबा बच्चा : सड़सठ का जवाहर जवान !

("नक्षत्रों की छाया में" से) (समाप्त)

"मैं सबसे पहले तैयार हूँ !"

नागोर जिले (राजस्थान) के ग्रामदानी गाँव 'श्यामपुरा' की सभा में गाँव-निवासी दानपत्र भर रहे थे, तब पंडित जयनारायणजी ने हँसते हुए कहा, "जागीरदार श्री दूलेसिंहजी के पास बहुत अधिक जमीन है, पर ये तो ना कहने वालों में से हैं।" इस पर तुरंत ही श्री दुलेसिंहजी ने अपनी सारी जमीन के दान-पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए जवाब दिया : "मुझे ना कहने वालों में शुमार करना भूल है। मैं सबसे पहले तैयार हूँ। जनदीठ बँटवारा न्याय-संगत है। मैं गाँव के साथ हूँ। शुभ काम कल करने के बजाय आज ही करना अच्छा है।"

---

www.vinoba.in

भगवान् का हाथ ! :१.

(हरिभाऊ उपाध्याय)

८ सितंबर को पर्यूषण-पर्व का अंतिम दिन था। अनजाने उसी दिन विजय-नगर (जिला अजमेर) में गांधी-स्मारक-संबंधी एक मीटिंग रख ली गयी थी। मुझे उसमें शरीक होना था। मसूदा और पीसांगपा ब्लाक (राष्ट्रीय विस्तार तथा सामुदायिक खंड) में मैंने दो दिन का दौरा रखा। विजयनगर से शुरूआत होने वाली थी। जैसी ही गांधी-स्मारक की मीटिंग खतम हुई, विजयनगर के एक प्रभावशाली कांग्रेस-कार्यकर्ता श्री कन्हैयालालजी भटेवड़ा ने सुझाया, "दासाहब, आज पर्यूषण का अंतिम दिन है। सब जैनी भाई-बहन उपासना में एकत्र हैं। आप भी चलें। पूज्य पन्नालालजी महाराज भी वहाँ हैं।" मुझे देव-दर्शन तथा संत-समागम में रुचि है। जैन-समाज से खास तौर पर प्रीति है; क्योंकि ये अहिंसा-धर्मी हैं। इन्हें माँ के दूध से अहिंसा मिलती है, जब कि मैंने बापू से थोड़ा-बहुत लिया है। एक तरह से दोनों अहिंसा-धर्मी हैं। इसलिए जैन-समाज के ऐसे अवसरों को मैं बस भर हाथ से नहीं जाने देता। मैं बड़े चाव से वहाँ गया। पूज्य पन्नालालजी महाराज ने अहिंसा-धर्म पर कहा और मुझे बताया कि आजकल के शासन-अधिकारियों को किस प्रकार जीव-हत्या को रोकना चाहिए। फिर भटेवड़ाजी ने मुझसे कुछ कहने के लिए कहा, "मेरे मन में तो शांति-दल बस गया था।" अहिंसक समाज जैसा था, महाराजजी ने खुद ही अहिंसा की चर्चा छेड़ दी थी। मैंने भी उसी धागे को आगे चलाया। जीव-रक्षा आवश्यक होते हुए भी उसमें शासकों की कैसी कठिनाइयाँ हैं, इसका जिक्र करके मैंने जैन-बंधुओं को संबोधन करके कहा, "आपने हिंसा-बल को छोड़ कर अहिंसा-धर्म स्वीकार किया, क्यों ? इसलिए कि हिंसा-बल बुरा था, आपने उसे त्याग दिया, यह बहुत अच्छा किया। परंतु आखिर वह एक बल तो था। उससे बहुत-से छोटे-बड़े काम तो निकलते थे। उसको छोड़ने के बाद आपको दूसरा बल पकड़ना चाहिए था, सो आपने नहीं किया। इसमें आप न इधर के रहे, न उधर के। कोई बल आपके पास नहीं रहा। पुराना हिंसा-बल छोड़ दिया, उसकी जगह नया कोई बल ग्रहण नहीं किया। आपको कोई दूसरा नया बल ग्रहण करना चाहिए। वह क्या हो सकता है ? हिंसा में मारने का बल था—अब आपने अहिंसा को तो अपनाया है, परंतु उसमें अंतिम बल जो 'मरना' है, उसे नहीं अपनाया। त्याग-तप के द्वारा एक तरह का स्वपीड़न तो करते हैं, संथारा आदि के द्वारा मरण को भी निमंत्रण देते हैं; परंतु वह सब स्वलक्षी हुआ। घर के, संस्था के, समाज के, राष्ट्र के काम के लिए, 'स्वपीड़न' या 'स्वमरण' का बल नहीं अपनाया। उसे अपनाने की जरूरत है। उसके अभाव में आप कमजोर, बे-असर रह गये, जब कि अहिंसा-धर्म वीर-धर्म है, जैन धर्म का दूसरा नाम ही वीर-धर्म है। इसलिए भगवान् 'महावीर' नाम इतना प्रचलित हुआ।"

"आये दिन देश में उपद्रव और उत्पात होते हैं। हम उन्हें मुँह बाये देखते रहते हैं। क्या जैनियों का यह धर्म नहीं है कि वे उन्हें अहिंसात्मक तरीके से रोकने का प्रयत्न करें ? शांति-दलों की स्थापना करके ऐसे उपद्रवों का होना असंभव कर दें ?"

मैंने देखा कि उपस्थित भाई-बहनों पर इसका अच्छा असर हुआ। उपाश्रय से निकलने के बाद मेरे मन में एक विचार आया। कन्हैयालालजी से मैंने कहा, "शांति-दल के बारे में आपको कैसा लगा ?" उन्होंने कहा, "मैंने तो पहले से ही अखबारों में पढ़ रखा है। आपने आज यहाँ अच्छा समझाया।"

"ढेबरभाई तथा पंतजी यहाँ जल्दी आने वाले हैं। मैं चाहता हूँ कि उनके आने के पहले अजमेर में कम-से-कम एक शांति-दल स्थापित हो जाय। भले ही पाँच आदमी हों। मैं नहीं चाहता कि लोग कहें कि ये खयाली पुलाव हैं, लेख लिखने और व्याख्यान देने से शांति-दल थोड़े ही बन जायेंगे। सो आप कम-से-कम एक नाम मुझे यहाँ से दीजिये, जो शांति-दल में शामिल हो सके।"

भटेवड़ाजी—(बड़े उत्साह से), "दासाहब, आप एक नाम क्यों माँगते हैं और ढेबरभाई की राह क्यों देखते हैं ? आज यहीं, इसी घड़ी, पर्यूषण के पर्व पर शांति-दल कायम कीजिये—पहला नाम मेरा लीजिये।"

"आप क्या कह रहे हैं ? यहाँ शांति-दल ? यह सेवा-दल नहीं है—मरने-वालों का दल है। एक भी नाम मिल जाय तो बहुत।"

"हाँ-हाँ, मैं मरने वालों के दल के लिए कहता हूँ। आपको कम-से-कम पाँच आदमी विजयनगर से मिलेंगे। आज और अभी शांति-दल स्थापित करके फिर मसूदा जाइये।"

हमें पकड़ कर ले गये। पाँच जिम्मेदार व्यक्तियों को बुलाया और उनकी मीटिंग करके एक प्रस्ताव पास कराया, जिसमें सबने प्राण देकर भी उपद्रवों से रक्षा करने की प्रतिज्ञा की। (क्रमशः)

राम-सन्निधि

(वीरेन्द्र दीक्षित)

तंत्र-विसर्जन एवं निधि-मुक्ति के बाद काम कैसे होगा, यह चिन्ता घेरे रहती थी। कुछ सूझता नहीं था। दिसम्बर '५६ में सामूहिक पदयात्रा-शिविर के सिलसिले में परंधाम-पवनार गया। वहाँ का सारा वातावरण अत्यन्त प्रेरक तथा विचारोत्तेजक था। फलस्वरूप वहाँ से लौटते ही काम में जुट पड़ने का निश्चय किया। संयोगवश, जनवरी के प्रथम सप्ताह में टीकमगढ़ तहसील में सामूहिक पदयात्रा-शिविर का आयोजन हुआ। श्री नाथूरामजी ने शिविर का प्रबन्ध जनावलम्बी पद्धति से किया। लगभग बीस कार्यकर्ता शामिल हुए। पड़ोस के झाँसी जिले से श्री लोकेन्द्र भाई अपनी नव-विवाहिता पत्नी गीता बहन तथा एक निजी सेवक के साथ पदयात्रा में शामिल होने आये थे। शिविर का उद्घाटन भी सुरेश रामभाई ने किया। 'क्रान्ति क्या है, क्यों होनी चाहिए और कैसे होगी ?'—इस विषय पर उनका अत्यन्त हृदयग्राही भाषण हुआ। ता० ६ से १४ जनवरी तक सामूहिक पद-यात्राएँ हुईं। कार्यकर्ताओं की कमी तथा पूर्व-तैयारी के अभाव के कारण जमीन कुछ कम मिली, परन्तु भविष्य के लिए वातावरण अनुकूल बन गया।

ग्रामदान प्राप्त करने के लिए कार्यकर्ताओं का प्रयास जारी है। विन्ध्य-प्रदेश में तंत्र-विसर्जन एवं निधिमुक्ति के बाद टीकमगढ़ जिले ने ही सर्वप्रथम ऐसा सामूहिक पदयात्रा-शिविर आयोजित करने का साहसपूर्ण कदम उठा कर सन् '५७ की भूमि-क्रान्ति का नारा बुलन्द किया है। उस जिले के लिए यह गौरव की ही बात है।

केन्द्रित निधि का आधार छोड़ देने पर "राम-सन्निधि" ही एकमात्र सहारा है। 'जनक्रान्ति' का आधार 'जनावलम्बन' ही हो सकता है, यह बात अब आईने की भाँति स्पष्ट हो गयी है। टीकमगढ़ तहसील का शिविर इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। विन्ध्य-प्रदेश हरी-भरी घाटियाँ, सुरम्य पहाड़ियाँ तथा कलकल निनाद करने वाले झरने 'भूमि-क्रान्ति' की सुरीली और मादक तान छेड़े बिना नहीं रहेंगे, ऐसा पूरा विश्वास है।

एक बात और। जगह-जगह हर तबके के साथ चर्चा करने का जब मौका आता है, तो इस आंदोलन के सम्बन्ध में उनका गहरा अज्ञान भी दीख पड़ता है। जैसे अगर भूमि का सवाल हल करते हैं, तो गृहोद्योग का क्या होगा, इत्यादि। शिक्षक और छात्रों तक काफी अज्ञान में हैं। हमारे कार्यकर्ताओं को जनता में फैल कर प्रचार करने की और जानकारी लेने की कितनी आवश्यकता है, यह ऐसे प्रसंगों पर अधिक महसूस होता है। उस रोज़ की बात है। भारतीय जनसंघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री प्रेमनाथजी डोगरा से जब भेंट हुई। उन्हें जब ग्रामदानों की बात मैंने बतायी, तो उनके मुँह से पहले तो यह निकला कि गाँववाले अगर सब दान दे चुके हैं, तो फिर खाते क्या होंगे ? लेकिन जब मैंने कहा कि गाँव वालों ने निजी स्वामित्व-विसर्जन करके एक परिवार के रूप में रहने का तय किया है, तब उन बूढ़े सज्जन की आँखों में चमक आ गयी। उन्हें जब सारी जानकारी मिली, तो बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

मतलब यह कि हमको अभी किस तरह प्रचार-कार्य करना है, इसका एहसास हो जाय एवं हम इस काम की ओर दुर्लक्ष्य न करें।

—अशुभ शक्ति की तुलना में उससे अधिक महान् शक्ति ही विजयी हो सकती है। सूली पर चढ़ी हुई देह नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा-प्राप्त तेजोमय देह ही दुनिया को बचा सकती है।

—भगवान् पर यदि सच्चा प्रेम करना है, तो हमें दूसरी तमाम आसक्तियों से एकदम अलिप्त ही रहना होगा।

—मालाजी

---

www.vinoba.in

तमिलनाड़ की क्रांतियात्रा से—

(निर्मला देशपांडे)

जब यहाँ के कार्यकर्ता कहने लगे कि यहाँ ज़मीन बहुत महँगी है, इसलिए ग्रामदान मुश्किल है, तो विनोबाजी ने कहा, "यह डिफरेन्स (फ़र्क) ही हमारे काम को रोकता है। हममें फेथ (श्रद्धा) होनी चाहिए कि जहाँ कावेरी बहती है, वहाँ ग्रामदान होना ही चाहिए। जनता कल्पवृक्ष है। उसके नीचे बैठ कर जैसी कल्पना करोगे, वैसा फल पाओगे। हमें मानव-हृदय पर विश्वास होना चाहिए। हिंसा को विकसित करने में मानव ने कितनी बुद्धि लगायी है, तब वह हैड्रोजन बम तक पहुँचा है। उसी तरह अहिंसा को विकसित करने के लिए हमें अपनी सारी बुद्धि लगानी होगी। जो मदुराई में बना, वह तंजाऊर में क्यों नहीं बन सकता है? मदुराई के बारे में भी पहले लोग यही कहते थे कि वहाँ ग्रामदान संभव नहीं है। हर एक को जमीन की आसक्ति समान ही होती है। लेकिन मनुष्य विचार से प्रेरित होकर काम करता है। स्वतंत्र वैराग्य की प्रेरणा महापुरुष को होती है, परन्तु विचार की प्रेरणा लाखों लोगों को होती है। हमें यह समझना चाहिए कि जैसी स्वराज्य की हवा बनी थी, वैसी ही ग्रामराज्य की हवा बनानी है।

"कार्यकर्ता थोड़े हों, तो भी पूरी लगनवाले होने चाहिए, तब वे खमीर बन जायेंगे और समाज के दूध में मिल कर उसका दही बनायेंगे। कार्यकर्ताओं में दो गुण होने चाहिए–पूरी लगन और परस्पर अनुराग। भक्त वह है, जो खुद तरता है और दूसरों को तारता है। मालकियत-विसर्जन का विचार हमारे हृदय में, जीवन में भरा है, तो वह दूसरों के जीवन में घुसेगा। शंकराचार्य कहते थे कि दुनिया मिथ्या है। जब कि सारी दुनिया सामने दीख रही थी, तब भी लोग उनकी बात सुनते थे, क्योंकि लोगों के सामने एक ऐसा मनुष्य खड़ा था, जिसे कोई आसक्ति नहीं थी। न शरीर के लिए, न भोग के लिए, न जीवन के लिए कोई आसक्ति थी।"

एक कार्यकर्ता के साथ चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "जब तक गुणावगुण-ग्रहण की वृत्ति रहेगी, तब तक क्रांति नहीं होगी। क्रांति के लिए हरि-ग्रहण की वृत्ति चाहिए।"

कायर का नहीं काम रे!

एक भाई को लिखे हुए पत्र में उन्होंने कहा, "सन् सत्तावन निःसंशय हमारी कसौटी का समय है। इस कसौटी में हम खरे उतरे, तो आगे बेड़ा पार ही है। पळनी के प्रस्ताव के अनुसार एक-एक जिले के लिए एक-एक निष्ठावान् मनुष्य मिल जाय, तो पाँच साल के परिणामस्वरूप आगे के काम की बुनियाद बन गयी, ऐसा कह सकते हैं। सिंधी कवि दुख का भजन है :

'वीरों की यह बाट है भाई, कायर का नहीं काम।
सिर पर बाँध कफन जो निकले, बिन सोचे परिणाम।'

"परिणाम हमको क्या सोचना है? परिणाम तो हमारे लिए भगवान् ने सोच रखा है। जमीन की मालकियत मिटनी है, सर्वोदय होना है और हमारे जीवन की परिपूर्णता और सार्थकता उसमें हो जानी है।"

लोकनीति के बिना उद्धार नहीं

एक सहयात्री के साथ चर्चा करते हुए विनोबाजी ने कहा, "हिंदुस्तान जैसे देश में, जहाँ भाषा-भेद, जाति-भेद, धर्म-भेद आदि असंख्य भेद हैं, वहाँ राजनीति भेद ही पैदा करेगी। इसलिए राजनीति को खतम करके लोकनीति की स्थापना किये बगैर हिंदुस्तान का उद्धार नहीं होगा। इंग्लैंड जैसे देश में समाज एकरस होने के कारण, वहाँ राजनीति यहाँ के जैसा भेद नहीं पैदा करती है। लेकिन यहाँ समाज एकरस नहीं है, इसलिए उसे एकरस बनाने के लिए राजनीति को समाप्त ही करना होगा। आज अपने देश में राजनीति को बहुत ज्यादा कीमत दी जाती है, यह एक खतरनाक बात है।"

शिक्षण सरकार के हाथ में न हो

कुछ दिन पहले भारत-सरकार के शिक्षा-विभाग के उप-मंत्री डॉ० श्रीमाली विनोबाजी से मिलने आये थे। उनके साथ 'धार्मिक शिक्षा' के बारे में बोलते हुए विनोबाजी ने कहा, "योरप की हालत हमसे भिन्न है। योरप में देश से धर्म बड़ा है, तो यहाँ धर्म से देश बड़ा है। योरप में जो छोटे-छोटे राष्ट्र बने हैं, उनका धर्म के नाम पर फेडरेशन बन सकता है। परंतु यहाँ एक ही देश में अनेक धर्म हैं। इंग्लैंड में 'सेक्यूलर (धर्म-निरपेक्ष राज्य) स्टेट' होते हुए भी धर्म की तालीम दी जा सकती है, क्योंकि वहाँ एक ही धर्म है। यहाँ अनेक धर्म होने के कारण मुश्किल पैदा होती है। इसके लिए यही करना होगा कि शिक्षा का जिम्मा स्टेट को उठाना नहीं चाहिए, वह ज्ञानियों का ही जिम्मा है। शिक्षण सरकार के हाथ में नहीं होना चाहिए। फिर देश में शिक्षा के भिन्न-भिन्न प्रयोग चलेंगे।

सब धर्मों का समन्वय होगा

"दूसरी बात यह है कि यहाँ सब धर्मों का समन्वय करना होगा। जब सब धर्मों का अच्छा अंश लेकर समन्वय करने वाला और हरएक धर्म में क्या गलत अंश है यह बताने वाला कोई महापुरुष पैदा होगा, तभी यह मसला हल होगा। हिंदुस्तान में पहले काफी धर्म-पंथ थे। शैव, वैष्णव, सांख्य, नास्तिक, बौद्ध, जैन आदि सबमें कश-मकश चलती रही। काफी मंथन और घर्षण चलता रहा। मंथन से मक्खन पैदा होता है और घर्षण से अग्नि। लेकिन जब शंकराचार्य पैदा हुए, तब वह कश-मकश मिटी। आज भी वैसे महापुरुष की आवश्यकता है, तो वह जरूर पैदा होगा।"

धूमकेतु की फेरी

[विनोबाजी के पदयात्री-दल का ता १९ जनवरी से ३ फरवरी तक के समाचार श्री वल्लभ-स्वामीजी ने भेजे हैं, वह नीचे दिये जा रहे हैं।—सं०

बाबा का स्वास्थ्य : बाबा का स्वास्थ्य साधारण ठीक है। पळनी के पहले की बीमारी की क्षीणता अभी दूर हुई हो, ऐसा नहीं दीखता है। फिर भी सत्-आवन की स्फूर्ति उनके क्षीण शरीर को वेग दे रही है। हर रोज बारह मील से ज्यादा नहीं और महीने की औसत दस मील से कम नहीं, यह उनका निर्देश उनकी पदयात्रा तय करने वालों को है। पळनी के बाद एक भाई को लिखा है कि सर्व-सेवा-संघ ने बड़ा ही क्रांतिकारी प्रस्ताव किया है। अब हमारे सब कार्यकर्ता "सर्वबंध विनिर्मुक्ताः पदं गमिश्यंति अनामयम्"—सब बंधनों से मुक्त हुए वे स्फूर्तिमय स्थान को प्राप्त करेंगे। फिर बाबा का स्वास्थ्य भी बिना सुधरे कैसे रहेगा?

परिवर्तन : बापू ने बाबा को पहले सत्याग्रही के नाते जब जाहिर किया, तब उनका परिचय देते हुए स्व० महादेव देसाई ने लिखा कि "विनोबा नित्य वर्धिष्णु है।" सतत आगे बढ़ते रहने के स्वभाव के अनुसार वे अपने जीवन में अनेक तरह के बदल करते रहते हैं। पिछले दो-तीन महीनों से जाहिर सभा का आरंभ प्रार्थना के बजाय प्रवचन से होता है। सभा के आखिर में पाँच मिनट की मौन प्रार्थना है। इस मौन प्रार्थना का अद्भुत असर महसूस होता है। दिंडिगल, कुंभकोणम् जैसे शहरों में पचीस-तीस हजार लोग एक क्षण में नीरव शांति में लीन हो जाते देखे गये हैं। शाम की प्रार्थना आठ बजे और सुबह की साढ़े तीन बजे निवास पर होती है। प्रार्थना में शाम को 'स्थितप्रज्ञ-लक्षण' के संस्कृत श्लोक, "ओम् तत्सत्" आदि और व्रत-स्मरण होता है। सुबह की प्रार्थना में संस्कृत में ईशावास्य का अलग एक-एक पद बोला जाता है। बाकी की दो बातें समान हैं। इस तरह दोनों समय की प्रार्थना में तीन-तीन चीजें होती हैं। ऊपर की तीन प्रार्थनाओं के अलावा दोपहर की कताई और सुबह का वेदाध्ययन–बाबा कहते हैं कि कुल मिला कर मेरी पाँच नमाज़ होती हैं।

पहले पड़ाव से निकलने का समय निश्चित रहता था, लेकिन अब पड़ाव पर पहुँचने का समय निश्चित किया है। अंतर के अनुसार निकलने का समय हर रोज तय किया जाता है। साढ़े आठ बजे पड़ाव पर पहुँच जाने का रखा है। घंटे में तीन मील की गति मान कर निकलने का समय तय किया जाता है। हिसाब ध्यान में रखने की बालबोध पद्धति के स्वरूप में बाबा ने एक दिन कहा, "साढ़े चार बजे हम निकलते हैं, तो पौने सात बजे तक पौने सात मील हम चले होंगे।"

अतिथि : वैसे तो आम तौर से अतिथि आते-जाते रहते ही हैं। पर विशेष अतिथियों में मिसेस चेस्टर बौल्स थीं। उड़ीसा में वह बाबा से मिली थीं। "हिंदुस्तान में जब आती हूँ, तब बाबा से मिलने की इच्छा लेकर आती हूँ", ऐसा उन्होंने निवेदन किया। बड़ी श्रद्धालु बनने लगीं। उनके साथ हैरिस वाफोर्ड नाम के न्यूयॉर्क के एक वकील भी थे। ये भाई कुछ साल पहले हिंदुस्तान में घूमे थे और "इंडिया अफायर" (प्रज्वलित हिंद) नाम की किताब भी उन्होंने लिखी है। भूदान आदि आंदोलन का ठीक-ठीक ग्रहण उन्हें हुआ है, ऐसा लगा। श्री गिरिधर भाई—बाबा के परंधाम-आश्रम के निवासी और बाद में गया जिले के भूदान-कार्य में भी भाग लेने वाले—करीब दो साल से बोधगया से करीब तीन मील की दूरी पर एक देहात के मंदिर में अयाचित वृत्ति से रहते थे। बाबा ने उन्हें पिछले साल मिलने को बुलाया था। तब उन्हें इच्छा नहीं हुई। अब सितंबर '५६ में वे निकल पड़े।

www.vinoba.in

१६५० मील चल कर २१ जनवरी को बाबा के पास पहुँचे। रोज की औसत १३ मील के करीब पड़ी, ऐसा कहते थे। एक-दो बार आठ-दस दिन बिमारी के कारण रुकना पड़ा, बाकी उनका स्वास्थ्य ठीक रहा। मध्य-प्रदेश में पिछले कई महीनों से अखंड पदयात्रा करने वाले वहाँ के भूदान-कार्यालय के संयोजक श्री दादाभाई नाईक बाबा के बुलाने से मिलने के लिए आये। उनके साथ श्री डोनाल्ड ग्रूम भी आये, जो कि पिछले १६ साल से हिन्दुस्तान में सेवा-कार्य कर रहे हैं। श्री दादाभाई के साथ वे भी कुछ महीनों से पदयात्रा कर रहे थे। श्री सिद्धराज ढड्ढा और वल्लभ-स्वामी पळनी के निर्णयों के अनुसंधान में आगे की कार्य-रचना के बारे में अब तक भिन्न-भिन्न स्थानों पर जो विचार-विमर्श हुआ तथा आखिर में खादीग्राम में प्रबंध-समिति ने जो सोचा है, उससे बाबा को परिचित करने के लिए और उनसे मार्गदर्शन पाने के लिए आये। यूनेस्को की पैरिस-शाखा में काम करने वाले श्री ढिंग्रा की पत्नी कमलाबहन अपनी बेटी के साथ पार्टी में आठ-दस दिन रहीं। भूदान के बारे में पहले भी वह उधर के लोगों को जानकारी देने का काम करती थीं। अब की बार बिदा देते हुए बाबा ने उन्हें कहा कि 'अब तो तुम्हें पूरे यूरोप में काम के लिए भेज दिया है।'

सत्तावन के मोरचे पर

पळनी के निर्णय के अनुसंधान में आगे की कार्य-रचना के बारे में जो परिपत्र सर्व-सेवा-संघ की ओर से निकाला गया है, उसमें एक वाक्य है कि 'हरएक परिवार अपने में से एक व्यक्ति क्रांतिकार्य में दे, ऐसी अपेक्षा है।' सर्वोदय विचारधारा की विशेषताओं में यह भी एक है कि उसका आचार अपने से शुरू करना होता है। बाबा सोचने लगे कि हमारी टोली भी एक परिवार ही है। टोली में से किसीको देना चाहिए। साथ ही आइक् का मध्यपूर्व का प्लॅन और उस पर पं० जवाहरलाल आदि की प्रतिक्रिया प्रकट करती है कि दुनिया की दशा आज कितनी डाँवाडोल है। ऐसी स्थिति में जब कि हर क्षण दुनिया हिंसा की ओर ढकेली जा रही है, इच्छापूर्वक अहिंसा की शक्ति को प्रकट करने का प्रयत्न करने वाला व्यक्ति अपने प्लॅन को साकार रूप दिये बिना कैसे रह सकता है? भूदान का एक-एक दानपत्र विश्वशांति के लिए दिया हुआ वोट है, ऐसा मानने वाला आगे का कदम उठावे, यह स्वाभाविक ही है। तंत्रमुक्ति, निधिमुक्ति का निर्णय उसी दिशा में है। सत्याग्रही लोक-सेवक एक-एक जिले के निवेदक (जिला-सेवक) आदि उसी प्लॅन के अंग हैं। टोली में से निर्मला को भेजा जाय, ऐसा बाबा ने बताया। लेकिन न्यूनतम देने से संतोष कैसे होगा? दिल खोल कर देना चाहिए न? बाबा ने कहा कि दूसरी दो बहनें, कुसुम और मीरा को भी क्यों न भेजा जायँ? बाबा के सामने दूसरी बाजू भी रखी गयी कि ये बहनें बाबा की चर्चा और भाषणों को लोगों तक पहुँचाने का काम करती हैं, तो उसमें बाधा नहीं पड़नी चाहिए। बाबा अनेक दृष्टि से सोचते हैं। विशिष्ट काम से भी व्यक्ति का विकास हो, यह उनको ज्यादा महत्त्व का लगता है। प्रति-क्षण नदी बहती है, इसलिए पानी ताजा और स्वच्छ रहता है, उसी तरह व्यक्ति के जीवन को भी प्रसंगानुसार प्रवाहित करना पड़ता है। बहनों को भेजने में हिंदुस्तान की स्त्री-शक्ति भी जाग्रत हो, यह भी उनका एक खयाल है। अब तक निर्मला देशपांडे और कुसुम देशपांडे रवाना हो गयी हैं। दोनों महाराष्ट्र की कन्याएँ होने से मराठी-भाषी क्षेत्र में काम करना आसान होगा, यह सोच कर निर्मला को औरंगाबाद जिले में और कुसुम को चांदा जिले में भेजा गया है। औरंगाबाद जिले में पिछले दो हजार साल की संस्कृति और राजकीय उथल-पुथल का असर और चिह्न मौजूद हैं, इतने महत्त्व का वह जिला है। चांदा जिले में ही मराठी-भाषी क्षेत्र में खादी-कार्य का आरंभ हुआ था। आर्यनायकमूजी ने एक दिन बातचीत में कहा कि "बाबा तो विचार-प्रचार पर इतना जोर देते हैं और इधर निर्मला और कुसुम को भेज दिया है, यह समझ में नहीं आता!" बाबा ने हँसते हुए कहा कि "हम ग्रामोद्योगवाले हैं। कच्चे माल को पक्का माल बनाना, यह हमारी प्रक्रिया है।" बाबा ने जवाब तो दे दिया, लेकिन इन बहनों को भेजने में बड़ा त्याग करना पड़ा है, यह बाबा भी जानते हैं। उन्होंने एक खत में लिखा है कि "निर्मला और कुसुम को भेजने में बहुत बड़ा त्याग करना पड़ा है। लेकिन बिना त्याग के क्रांति कैसी?" श्री काका अत्रे, जो कि एक अच्छे इंजिनियर हैं, लेकिन कई सालों से सब छोड़ कर वे एक देहात में ग्राम-सेवा के लिए बैठे थे और अब तीन-चार सालों से सर्व-सेवा-संघ के दफ्तर में हम सबकी मदद करते थे, उन्हें भी बाबा ने परभनी जिले में भेजा है।

भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण

बंगाल में सामूहिक पदयात्रा

क्रांति-वर्ष '५७ के प्रथम दिन से मिदनापुर जिले की सामूहिक पदयात्रा केशपुर थाने में शुरू हुई। पूरा समय देने वाले २५ कार्यकर्ताओं ने उसमें भाग लिया। डेबरा और पिंगला थाने में इसके पहले ही १०० कार्यकर्ताओं ने पद-यात्राएँ कीं। फलतः २०० एकड़ भूदान और १५००) का संपत्तिदान मिला। केशपुर थाने की पदयात्रा में १६९ दाताओं से ६१ एकड़ भूदान, २०६ दाताओं से १३३७) का वार्षिक संपत्तिदान मिला। ७२ दाताओं से अन्नदान भी मिला। १६०) की साहित्य-बिक्री हुई। भू-क्रांति में पूरा समय देने वाले ३ कार्यकर्ता मिले।

राजस्थान

भीलवाड़ा, अजमेर तथा चितौड़ जिलों की सामूहिक पदयात्रा ९ जनवरी से सुवाना ग्राम से शुरू हुई। श्री गोकुलभाई भट्ट के भाषणों से लोगों को जगह-जगह काफी उत्साह मिला है। एक गाँव में यह संकल्प प्रकट किया गया कि 'गायमार जमाया तेल' (डालडा) का उपयोग नहीं करेंगे। ४३ व्यक्तियों ने संपत्तिदान दिया। ८ भीलों ने शराब छोड़ी और २ कलारों ने शराब न बेचने की प्रतिज्ञा की। इन कलारों को गाँव के लोगों द्वारा भूमि देने का आश्वासन भी मिला

तंत्रमुक्ति और निधिमुक्ति की घोषणा के बाद राजस्थान खादी-संघ ने राजस्थान के सात जिलों में भूदान के काम का जिम्मा ले लिया। इसी संबंध में खादी-संघ के मंत्री श्री रामेश्वर अग्रवाल ने सीकर और झुंझुनु जिले का दौरा कर कार्यकर्ताओं से संपर्क स्थापित किया।

नागोर जिले में भूदान-पदयात्रा

गणतंत्र-दिवस, ता० २६ जनवरी '५७ को जिला भूदान-सेवक श्री बद्रीप्रसाद स्वामी व श्री मोहनलालजी मकराना से जिला-व्यापी अखंड पदयात्रा के लिए रवाना हुए। उन्हें जिले की सर्वप्रथम तहसील के करीब १५ गाँवों की ७० मील की पदयात्रा में ५ फरवरी तक कुल ९०० बीघा भूमि व २८ संपत्तिदान-पत्र प्राप्त हुए। कई कार्यकर्ताओं ने समयदान दिया, जिनमें कुचामन सिटी हाईस्कूल के २५ विद्यार्थियों का समय-दान सबसे महत्त्वपूर्ण है। प्राप्त भूमि में से ४२५ बीघा भूमि २७ परिवारों में वितरित की जा चुकी है। यह पद-यात्रा ८ मार्च तक चलेगी।

बिहार : क्रांति-पथ पर

पटना जिला, जो तंत्र-विसर्जन और निधि-मुक्ति के विचार को सर्वप्रथम समूचे हिंदुस्तान में एक छोटा, पर साकार रूप देने वाला रहा है, अपने जिला-सेवक विद्यासागर भाई के साथ कंधे-से-कंधा मिला कर क्रांति के प्रयोग में लगा है। इस जिले के कार्यकर्ताओं ने सघन पदयात्रा बराबर जारी रखी है। लेकिन उसका पुराना ढंग छोड़ दिया है। कार्यकर्ताओं ने गहराई से काम करने के लिए एक हिस्सा मोकामा, बाढ़, बख्तियारपुर का चुन लिया है। १०-१५ दिन एक क्षेत्र के गाँव-गाँव में जमीन माँगते, साहित्य बेचते, ग्राहक बनाते, सेवकों की भर्ती करते, विचार समझाते हुए, किसी निश्चित तिथि पर 'ग्राम-राज-सम्मेलन' की तैयारी करते हुए कार्यकर्ता घूमते हैं।

मुजफ्फरपुर के सेवक डॉ० श्री शत्रुघ्नजी अपने साथियों सहित दौरा कर सर्वोदय का विचार जन-जन तक पहुँचाने की अथक कोशिश कर रहे हैं। उन्हें ग्राम-दान भी मिल रहे हैं।

पूर्णिया और चंपारन में सर्वोदय-पक्ष में शुरू की हुई पदयात्रा श्री वैद्यनाथ बाबू पूरी करेंगे। श्री धीरेंद्रभाई भी बीच में शामिल होते हैं। वे मुँगेर जिले में भूदान-क्रांति करने में लगे हैं। जगह-जगह ग्रामराज-संमेलन की धूम जिले में है।

श्रमभारती, खादीग्राम इसी जिले में हैं। श्रमभारती को जंगम विद्यालय बना कर किस प्रकार भूदान-कार्य किया जाय, इसका एक अभिनव प्रयोग जमुई सब-डिविजन में किया जा रहा है। शिक्षण-संस्थाओं के लिए यह प्रयोग बड़ा सहायक होगा। २५ जनवरी को जमुई थाने का 'मित्र-संमेलन' किया गया। उसके बाद छात्र और शिक्षकों की टोलियाँ निकलीं।

इसी प्रकार दूसरे जिलों में कार्यक्रम तैयार हो रहे हैं। साहित्य और पत्रिका कार्यकर्ताओं को बिक्री के लिए देने की जिम्मेदारी खादी-ग्रामोद्योग-संघ ने ले ली है। जमीन के वितरण और भूमिहीनों की मदद के लिए 'बिहार-भूदान-कमेटी' पूरी शक्ति से जुटी है।

www.vinoba.in

मुजफ्फरपुर जिले के कटरा थाना स्थित सर्वोदय-आश्रम, रतवारा में २६ जनवरी को 'सन् सत्तावन-दिवस' पर २५ भूमिहीन परिवारों में २५ बीघा भूमि और २४ कुदालें वितरित की गयीं।

भागलपुर जिले का प्रथम सर्वोदय-छात्र-संमेलन १९-२० जनवरी को भागलपुर में हुआ। श्री जयप्रकाशजी के आवाहन के फलस्वरूप तीन छात्रों ने दूसरे दिन से ही कॉलेज-स्कूल छोड़ने का संकल्प किया तथा २४ छात्रों ने मई से १ वर्ष तक समय देने का संकल्प किया है।

मध्यप्रदेश

पुराने मध्य भारत के भूदान-कार्यकर्ता नवम्बर से ही अर्थ एवं तंत्र-मुक्त हुए। निमाड़ जिले की जिम्मेवारी श्री खोड़ेजी ने ली। पूरा समय देने वाले और चार साथी हैं। मध्यभारत में दिसंबर माह में ३० ग्रामों से ४४१ बीघा भूमि प्राप्त हुई और ३५ ग्रामों के ३८६ परिवारों में ३८४७ बीघा भूमि वितरित की गयी।

ता० ६ से १२ जनवरी तक टीकमगढ़ तहसील में सामूहिक पदयात्रा हुई। १३९ एकड़ भूमि मिली और १०६) की साहित्य-बिक्री हुई। ३५९) का संपत्तिदान मिला, ८५ ग्राहक बने।

गुजरात

* खानदानिया ग्राम ग्रामदान में मिला है। गुजरात का यह दूसरा ग्रामदान है।

श्री रविशंकर महाराज ने खेड़ा जिले की ७०३ मील की पदयात्रा १२२ दिनों में १२ जनवरी को पूरी की। जिले के १० तालुकों के २४१ गाँवों में भूदान-संदेश पहुँचाया। १०८७ बीघा भूदान मिला, जिसमें से ३७१ बीघा भूमि १४९ भूमिहीन परिवारों में वितरित की गयी। २४३०७) वार्षिक के संपत्तिदान-पत्र, ३३५२८) का साधन-दान और वार्षिक १४५३९ का पाँच वर्ष के लिए अन्नदान मिला। ३७० सूतगुंडियाँ, १० चरखे, ९ हल, १ बैल और अन्य खेती के औजार भी मिले।

उत्तर प्रदेश

श्री बाबा राघवदासजी के आवाहन से प्रेरणा पाकर जिला फर्रुखाबाद ग्राम ज्योता के निवासी यमुनाप्रसादजी शाक्य ने जीवन-दान दिया और २७ जनवरी से कुछ साथियों एवं छात्रों के साथ पदयात्रा में निकल पड़े।

एटा जिले में २० दिसंबर से २० जनवरी तक २१५ मील की सघन पदयात्रा ६७ ग्रामों में हुई। २१४) की साहित्य-बिक्री, ७३ गुंडियाँ सूत्रदान मिला और १७ भूमिहीनों में भूमि वितरित की गयी।

गोरखपुर कमिश्नरी के फरेन्दा तहसील में २५ नवंबर '५६ से ३१ जनवरी '५७ तक सामूहिक पदयात्रा हुई। प्रथम शिविर का उद्घाटन श्री कपिलभाई ने किया और समाप्ति-समारोह श्री विचित्रभाई द्वारा सम्पन्न हुआ। तहसील के ६२५ गाँवों में ६२ टोलियों ने कुल २५४७ मील की पदयात्रा की। फलस्वरूप १५३ गाँवों के ३६१ दाताओं द्वारा ११० एकड़ भूमि-दान, २१००) का सालाना संपत्तिदान और ९६९ अन्नदान मिला। ७००) की साहित्य-बिक्री हुई, ३४ ग्राहक बने। ३० परिवारों में, जिनमें २१ हरिजन हैं, भूमि-वितरण किया गया।

हिमाचल प्रदेश

हरिजन-सेवक-संघ व अशोक आश्रम, कालसी (देहरादून) के कार्यकर्ताओं ने २९ अक्टूबर से ९ नवंबर के बीच चकरोता से रामपुर बुशहर तक १५० मील की पदयात्रा की। हर पड़ाव पर अस्पृश्यता-निवारण के साथ-साथ भूदान व संपत्तिदान-प्रचार चलता रहा। लगभग २०० बीघा भूमि और ४७) के सम्पत्तिदानपत्र प्राप्त हुए।

बंबई

बंबई शहर और उपनगर में १ दिसंबर से २० दिसंबर तक भूदान-साहित्य की विभिन्न भाषाओं की ७१०) की १९११ पुस्तकें बिकीं। ९४ ग्राहक बने। ४ दाताओं से ३०५) का साधन-दान मिला।

भंडारा जिले के अड्याळ गाँव के श्री दा० ग० कुंभारे गांधी-स्मारक-निधि से ९०) मासिक वेतन लेकर ग्राम-सेवा करते थे। अब जनवरी से उन्होंने वेतन लेना बंद करके लोकसेवकत्व स्वीकार किया है।

'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक के वितरण के आँकड़े (८ फरवरी '५७)

क्रम	प्रान्त	एजंट-ग्राहक	क्रम	प्रान्त	एजंट-ग्राहक
१	आन्ध्र	२५	१४	पेप्सू	३१
२	आसाम	४४	१५	बंगाल	४१०
३	उत्तरप्रदेश	३८५८	१६	बम्बई शहर	१३२
४	उड़ीसा	५४	१७	बिहार	५२८६
५	अंडमन	१	१८	मध्यप्रदेश (नया)	९२५
६	कच्छ	४	१९	महाराष्ट्र	२१५
७	केरल	१४	२०	मैसूर	५४
८	गुजरात	६८	२१	राजस्थान	३१२
९	जम्मू-काश्मीर	३	२२	सौराष्ट्र	४६
१०	तमिलनाड	१४	२३	हिमाचल प्रदेश	२२
११	दिल्ली	६३	२४	हैदराबाद	७१
१२	नैपाल	१	२५	विदेश	११
१३	पंजाब	५३५			
				कुल प्रतियाँ	१२,१९९

उत्तर-प्रदेश में ४७३, बंगाल में ३३५, नये मध्य-प्रदेश में २०७, बिहार में १४४९, इस तरह कुल २५८२ अंक एजेंटों द्वारा बिकते हैं, जो ऊपर की संख्या में शामिल हैं। शेष प्रांतों में एजेंटों द्वारा सौ से कम अंक जाते हैं। वे भी ऊपर के आँकड़ों में शामिल हैं। —व्यवस्थापक

प्रकाशन-समाचार

राजनीति से लोकनीति की ओर : सर्वोदय के तत्त्वचिंतक, पृष्ठ १२४, मूल्य ।।)

वर्तमान लोकशाही के प्रति दिन-ब-दिन असन्तोष बढ़ रहा है। सत्ता में पहुँच कर ही देश की सेवा सम्भव है, ऐसा मानने की अब कोई आवश्यकता नहीं रही। भूदानयज्ञ-आन्दोलन के देशव्यापी प्रभाव ने सर्वोदय को समझने की उत्कंठा काफी बढ़ा दी है। उक्त पुस्तक में चुनाव तथा लोकनीति सम्बन्धी सर्व-सेवा-संघ की नीति और इस सम्बन्ध में समय-समय पर पारित प्रस्तावों का विवरण प्रस्तुत करने के साथ-साथ विनोबाजी, जयप्रकाशजी, दादा धर्माधिकारी, शंकरराव देव, कुमारप्पाजी आदि सर्वोदय के जाने-माने विचारकों के विचारों का भी संकलन है। सर्वोदय की मूलगामी राजनीति को जानने के लिए उक्त पुस्तक एक मार्गदर्शिका है।

चुनाव : ले० विनोबा पृष्ठ ३२, मूल्य =)

'राजनीति से लोकनीति की ओर' पुस्तक में से केवल चुनाव-सम्बन्धी अंश इस पुस्तक में संग्रहीत हैं। मोटे अक्षरों में छपी यह पुस्तक साधारण शिक्षित भी पढ़ सकता है। भाषा व भाव की दृष्टि से विषय समझने में किसीको कोई कठिनाई न होगी। —अ० भा० सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी

श्री विनोबाजी का तंजाऊर जिले का पता : C/o श्री टी० के० श्रीनिवासन्, लोकसेवक; १८१६ वेस्ट स्ट्रीट, तंजाऊर P.O. TANJORE (S.I.)

विषय-सूची

१.	आत्मपरीक्षण की वेला !	विनोबा	१
२.	सत्याग्रही लोक-सेवकों से—	सहमंत्री	२
३.	लोक-सेवकों की कसौटी !	धीरेन्द्र मजूमदार	२
४.	देशभक्ति और नागरिक सदाचार	बा० गं० खेर	३
५.	सरकारी सेवकों से—	विनोबा	४
६.	बिहार के गाँव-गाँव में १८ अप्रैल '५७ का भू-वितरण-आयोजन	वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी	५
७.	स्वराज्य के बाद ग्रामराज्य !	विनोबा	६
८.	सर्वोदय की दृष्टि से :		
	१. सर्वोदय और चुनाव	सिद्धराज ढड्ढा	६
	२. चुनाव-कमिश्नर की सामयिक सलाह	,, ,,	७
९.	बीच की राह !	विनोबा	७
१०.	धन के उपयोग का तरीका	श्री अरविंद	८
११.	विनोद की घड़ियों में : ३.	श्रीकृष्णदत्त भट्ट	८
१२.	भगवान् का हाथ ! : १.	हरिभाउ उपाध्याय	९
१३.	राम-सन्निधि	वीरेन्द्र दीक्षित	९
१४.	तमिलनाड की क्रांतियात्रा से—	निर्मला देशपांडे	१०
१५.	धूमकेतु की फेरी	वल्लभस्वामी	१०
१६.	भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण, प्रकाशन-समाचार आदि	—	११-१२

सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : पोस्ट बॉक्स नं० ४१, राजघाट, काशी

www.vinoba.in